मुंबई(महाराष्ट्र) से प्रकाशित

उत्तरशक्ति

हिन्दी दैनिक

मुंबई
वर्षः 8 अंक 58
शनिवार, 06 सितम्बर 2025
मूल्य 3 रुपए, पृष्ठ-6
RNI NO. MAHHIN/2018/76092
email ID- uttarshaktinews@gmail.com
www.uttarshaktinews.com

हर खबर निष्पक्षता के साथ

पंजाब में बाढ़ का विकराल रूप, 43 लोगों की मौत

◆आप सांसद ने मदद के लिए दिए 5 करोड़

◆केंद्र से मांगा दस हजार करोड़ का राहत पैकेज

पंजाब, 05 सितम्बर। आम आदमी पार्टी (अअढ) के राज्यसभा सांसद विक्रमजीत सिंह साहनी ने पंजाब के बाढ़ राहत कार्यों के लिए 5 करोड़ रुपये देने का वादा किया है। इसके लिए उन्होंने सांसद स्थानीय क्षेत्र विकास योजना (टढछअऊ) के तहत आवंटित राशि और अपने निजी योगदान से धन जुटाया है। साहनी ने घोषणा की कि इस राशि का एक हिस्सा उन्नत बचाव नौकाओं, आधुनिक गाद निकालने वाली मशीनों और भविष्य में आने वाली आपदाओं से संवेदनशील क्षेत्रों की सुरक्षा के लिए तटबंधों के निर्माण पर खर्च किया जाएगा। अपने गैर-सरकारी संगठन, सन फाउंडेशन के माध्यम से, साहनी पहले ही मोटरबोट, एम्बुलेंस, सूखा राशन किट, चिकित्सा आपूर्ति, स्वच्छता सामग्री और पशुओं के चारे पर 1 करोड़ रुपये से अधिक खर्च कर चुके हैं। उन्होंने अगले बुवाई चक्र के लिए सीमांत किसानों को उर्वरक, बीज और कीटनाशक उपलब्ध कराने का भी आश्वासन दिया। केंद्रीय सहायता का आग्रह करते हुए, साहनी ने 10,000 करोड़ रुपये के राहत पैकेज की मांग की, जिसमें फसल नुकसान का सामना कर रहे किसानों के लिए 50,000 रुपये प्रति एकड़ मुआवजे के साथ-साथ दिहाड़ी मजदूरों और पशुपालकों के लिए आर्थिक सहायता का प्रस्ताव रखा गया।

पंजाब में प्रशासन हाई अलर्ट पर है क्योंकि भाखड़ा बांध का जलस्तर 1,679 फीट तक पहुँच गया है, जो इसकी अधिकतम क्षमता से केवल एक फीट कम है। पानी का प्रवाह बढ़ने के साथ, रूपनगर प्रशासन ने सतलुज नदी के आसपास के निवासियों को अलर्ट जारी किया है और तुरंत सुरक्षित क्षेत्रों और राहत शिविरों में जाने का आग्रह किया है। पौंग बांध भी अपनी क्षमता से अधिक हो गया है, जहाँ जलप्रवाह 1.32 लाख क्यूसेक तक पहुँच गया है, जिससे बड़ी मात्रा में पानी छोड़ना पड़ा है। अधिकारियों ने चेतावनी दी है कि भाखड़ा से पानी का बहाव 80,000-85,000 क्यूसेक तक बढ़ सकता है, जिससे निचले इलाकों में बाढ़ का खतरा बढ़ सकता है। पंजाब में जारी बाढ़ आपदा ने 14 ज़िलों में अब तक 43 लोगों की जान ले ली है, जबकि पठानकोट में तीन लोग लापता हैं। 1.71 लाख हेक्टेयर कृषि भूमि पर खड़ी फसलें नष्ट हो गई हैं, जिससे राज्य की कृषि अर्थव्यवस्था तबाह हो गई है। बाढ़ ने 23 ज़िलों के 1,902 गाँवों को जलमग्न कर दिया है, जिससे 3.84 लाख से ज्यादा निवासी प्रभावित हुए हैं। आपदा मोचन बलों और स्थानीय प्रशासन ने लगभग 21,000 लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाया है। पंजाब में आई विनाशकारी बाढ़ में मरने वालों की संख्या बृहस्पतिवार को बढ़कर 43 हो गई, वहीं 1.71 लाख हेक्टेयर में लगी फसलें बर्बाद हो गई हैं। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने बृहस्पतिवार को पंजाब के बाढ़ प्रभावित इलाकों का दौरा किया और फसलों को हुए नुकसान का जायजा लिया।

उत्तराखंड में हर जिले में वृद्धाश्रम की व्यवस्था होगी: धामी

उत्तराखंड, 05 सितम्बर। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने प्रदेश के हर जिले में एक-एक वृद्धाश्रम बनाने, दिव्यांगजन से विवाह करने पर प्रोत्साहन राशि बढ़ाकर 50,000 रुपये करने और कक्षा एक से आठ तक के दिव्यांग छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति हेतु आय सीमा समाप्त करने की बृहस्पतिवार को घोषणा की। मुख्यमंत्री ने ये घोषणाएं वरिष्ठ नागरिकों एवं दिव्यांगजनों के साथ संवाद कार्यक्रम के दौरान कीं। इस अवसर पर उन्होंने दिव्यांग शादी अनुदान एवं राष्ट्रीय पारिवारिक लाभ योजना के पोर्टल की शुरूआत की और समाज कल्याण विभाग की विभिन्न योजनाओं के तहत दी जा रही पेंशन की वित्त वर्ष 2025झ्र26 की पांचवीं किस्त का ऑनलाइन भुगतान भी किया। इस मौके पर अपने संबोधन में मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश के सभी जिलों में एक-एक वृद्धाश्रम की

व्यवस्था की जायेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार राज्य के सभी जिलों में वृद्धाश्रमों की व्यवस्था को सुदृढ़ कर रही है। उन्होंने कहा फिलहाल बागेश्वर, चमोली और उत्तरकाशी में राजकीय वृद्धाश्रम संचालित हो रहे हैं, जबकि देहरादून, अल्मोड़ा और चंपावत में नए भवन निमार्णाधीन हैं।

इसके अतिरिक्त, हरिद्वार, ऊधमसिंह नगर और नैनीताल सहित विभिन्न क्षेत्रों में गैर-सरकारी संगठनों द्वारा संचालित वृद्धाश्रम भी कार्यरत हैं। उन्होंने बताया कि वरिष्ठ नागरिकों के अधिकारों की रक्षा के लिए राज्य में माता-पिता एवं वरिष्ठ नागरिक भरण-पोषण अधिनियम लागू किया गया है, जिससे बुजुर्गों को अपने बच्चों या कानूनी उत्तराधिकारियों से भरण-पोषण प्राप्त करने का कानूनी अधिकार मिला है। मुख्यमंत्री ने कहा कि दिव्यांग युवक-युवती से विवाह करने पर प्रोत्साहन अनुदान राशि को 25,000 रुपये से बढ़ाकर 50,000 रुपये किया जाएगा तथा दिव्यांग छात्रवृत्ति योजना के तहत कक्षा एक से आठ तक के दिव्यांग छात्र-छात्राओं के लिए आय सीमा समाप्त कर दी जाएगी। धामी ने कहा कि बुजुर्गों और दिव्यांगजनों से संवाद का उद्देश्य उनकी समस्याओं और आवश्यकताओं को सीधे तौर पर जानना था ताकि उनके समाधान के लिए और अधिक ठोस कदम उठाए जा सकें। उन्होंने कहा कि हाल में देहरादून में प्रधानमंत्री दिव्याशा केंद्र की शुरूआत की गई है और भविष्य में ऐसे केंद्र हर जिले में खोले जाएंगे।

चीन सीमा विवाद भारत की सबसे बड़ी चुनौती: अनिल चौहान

नई दिल्ली, 05 सितम्बर। चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) जनरल अनिल चौहान ने शुक्रवार को कहा कि चीन के साथ भारत का सीमा विवाद देश के लिए सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। गोरखपुर में एक सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि चीन का सीमा विवाद सबसे बड़ी चुनौती बना हुआ है, वहीं भारत के खिलाफ पाकिस्तान का छद्म युद्ध अगला बड़ा मुद्दा है। उन्होंने आगे कहा कि इस्लामाबाद की रणनीति हमेशा से 'भारत को हजार जख्म देकर लहूलुहान करने' की रही है।

अनिल चौहान ने उपस्थित लोगों को बताया कि देशों के सामने चुनौतियाँ क्षणिक नहीं हैं; वे विभिन्न रूपों में मौजूद हैं। मेरा मानना है कि चीन के साथ सीमा

विवाद भारत के लिए सबसे बड़ी चुनौती है और आगे भी रहेगी। दूसरी बड़ी चुनौती पाकिस्तान का भारत के खिलाफ छद्म युद्ध है, जिसकी रणनीति 'भारत को हजार जख्मों से लहूलुहान करने' की है। उन्होंने कहा कि एक और चुनौती यह है कि युद्ध के क्षेत्र बदल गए हैं—अब इसमें साइबर और अंतरिक्ष भी शामिल हैं। हमारे दोनों प्रतिद्वंद्वी परमाणु शक्ति संपन्न हैं, और यह तय करना हमेशा एक चुनौती बना रहेगा कि हम उनके खिलाफ किस तरह के अभियान चलाना चाहते हैं।

शीर्ष सैन्य अधिकारी ने मई में पाकिस्तान के खिलाफ ऑपरेशन सिंदूर पर भी बात की, जिसमें भारत ने 22 अप्रैल के पहलगाम हमले के जवाब में पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में आतंकवादी बुनियादी ढांचे को निशाना बनाया था। उन्होंने कहा कि ऑपरेशन के दौरान सशस्त्र बलों को पूरी तरह से परिचालन की आजादी थी और इसका उद्देश्य हमारे धैर्य की सीमा रेखा खींचना था। उन्होंने कहा, ₹ऑपरेशन सिंदूर के दौरान हमें पूरी तरह से परिचालन की आजादी थी, जिसमें योजना बनाना और लक्ष्यों का चयन भी शामिल था। इसका उद्देश्य आतंकवादी हमले का बदला लेना नहीं, बल्कि हमारे धैर्य की सीमा रेखा खींचना था।

सरकारी विद्यालयों के शिक्षक दोपहर का भोजन छात्रों के साथ करें : मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी

तेलंगाना, 05 सितम्बर। तेलंगाना के मुख्यमंत्री ए रेवंत रेड्डी ने शुक्रवार को सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों से आह्वान किया कि वे दोपहर का भोजन छात्रों के साथ करें ताकि भोजन की गुणवत्ता सुनिश्चित की जा सके।

रेड्डी ने यहां शिक्षक दिवस पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि उन्हें दुख होता है जब सरकारी विद्यालयों में खाद्य विषाक्तता की घटनाएं होती हैं, जबकि सरकार भोजन और अन्य बुनियादी आवश्यकताओं के लिए धनराशि बढ़ा रही है।

शिक्षा विभाग का भी कार्यभार संभाल रहे रेड्डी ने कहा कि वहविद्यालयों का दौरा भी करेंगे और छात्रों के साथ भोजन करेंगे। उन्होंने कहा, अगर शिक्षक छात्रों के साथ भोजन करेंगे, तो इससे भोजन तैयार करने के उचित मानकों को बनाए रखने में मदद मिलेगी। मुख्यमंत्री ने शिक्षकों से भोजन की गुणवत्ता और अन्य सुविधाओं में सुधार की

आवश्यकताओं के बारे में सरकार को सूचित करने को कहा। रेड्डी ने कहा कि उनकी सरकार शिक्षा के क्षेत्र में सर्वोत्तम तरीकों का अध्ययन करने के लिए प्रतिवर्ष लगभग 200 शिक्षकों को सिंगापुर और दक्षिण कोरिया जैसे देशों में भेजने की योजना बना रही है। उन्होंने कहा, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की वजह सेसिंगापुर और जापान जैसे देशों में विकास हुआ है।

रेड्डी ने कहा कि राज्य में लगभग 27,000 सरकारी विद्यालयों में 24 लाख छात्र पढ़ते हैं, जबकि 11,000 निजी विद्यालयों में 34 लाख छात्र पढ़ते हैं। उन्होंने कहा, सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों की योग्यता आमतौर पर निजी विद्यालयों के शिक्षकों से बेहतर होती है।

रेड्डी ने कहा कि राज्य की नयी शिक्षा नीति तैयार करने के लिए पूर्व राज्यसभा सदस्य के केशव राव, विधायक कादियम श्रीहरि और अधिकारियों की एक समिति गठित की गई है।

रेड्डी ने दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की सफलता का हवाला देते हुए कहा, उन्हें दूसरे और तीसरे कार्यकाल के लिए मुख्य रूप से शिक्षा में लाए गए बदलावों के कारण चुना गया। उन्होंने शिक्षा को शिक्षकों द्वारा गरीब वर्गों तक सफलतापूर्वक पहुंचाया गया। मुख्यमंत्री ने अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं को स्वीकार करते हुए कहा, मेरा भी कुछ स्वार्थ है। अगर आप अच्छा काम करेंगे, तो मेरे लिए दूसरे और तीसरे कार्यकाल की संभावना बन सकती है। मैं कुछ भी छिपाना नहीं चाहता। मैं कड़ी मेहनत करूंगा। मैं आपके साथ मिलकर कड़ी मेहनत करूंगा।

त्रिभाषा फॉमूर्ला नामंजूर: उपमुख्यमंत्री उदयनिधि स्टालिन

तमिलनाडु, 05 सितम्बर। तमिलनाडु के उपमुख्यमंत्री उदयनिधि स्टालिन ने शुक्रवार को दोहराया कि राज्य त्रिभाषा नीति को कभी स्वीकार नहीं करेगा। वह यहाँ अन्ना शताब्दी पुस्तकालय सभागार में स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित एक सरकारी समारोह में अध्यक्षीय भाषण दे रहे थे और डॉ. राधाकृष्णन पुरस्कार प्रदान कर रहे थे। उदयनिधि स्टालिन ने कहा कि तमिलनाडु त्रिभाषा नीति को कभी स्वीकार नहीं करेगा। दो-भाषा प्रणाली पर्याप्त से अधिक है।

त्रिभाषा विवाद ने 2020 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) के कार्यान्वयन को लेकर केंद्र और तमिलनाडु सरकार के बीच गतिरोध पैदा कर दिया है। द्रमुक सरकार ने त्रिभाषा नीति को भगवाकरण नीति करार दिया है जिसका उद्देश्य भारत के विकास के बजाय हिंदी को बढ़ावा देना है। केंद्र ने तमिलनाडु को समग्र शिक्षा अभियान (एसएसए) के तहत करोड़ों रुपये की धनराशि रोक दी, क्योंकि राज्य ने एनईपी 2020 के प्रमुख पहलुओं, विशेष रूप से त्रि-भाषा फॉमूर्ले को लागू करने से इनकार कर दिया था।

इस साल मई में, तमिलनाडु सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय में एक मूल मुकदमा दायर किया, जिसमें केंद्र पर समग्र शिक्षा योजना के तहत 2000 करोड़ से अधिक की महत्वपूर्ण शिक्षा निधि के अपने वार्षिक हिस्से को रोकने का आरोप लगाया गया था। तमिलनाडु द्वारा एनईपी 2020 के

प्रमुख पहलुओं, विशेष रूप से त्रि-भाषा फॉमूर्ले को लागू करने से इनकार करने के परिणामस्वरूप, केंद्र ने समग्र शिक्षा अभियान (एसएसए) के तहत केंद्रीय शिक्षा सहायता में 573 करोड़ रुपये रोक दिए हैं। उदयनिधि स्टालिन ने ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की परिवर्तनकारी भूमिका पर जोर दिया।

उन्होंने कहा, ₹पहले जब हम गाँवों में जाते थे, तो लोग किसी घर की ओर इशारा करके कहते थे, 'यह शिक्षक का घर है।' आज, वे गर्व से कहते हैं, 'यह डॉक्टर का घर है, यह जज का घर है।' इससे पता चलता है कि शिक्षा ग्रामीण समुदायों में कितनी दूर तक फैल गई है।₹ शिक्षकों के महत्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डालते हुए, उदयनिधि ने कहा, ₹मध्याह्न भोजन योजना से लेकर सभी विशेष कल्याणकारी कार्यक्रमों तक, इसका श्रेय शिक्षकों को जाता है। खेल मंत्री के रूप में एक विशेष अनुरोध करते हुए, उन्होंने आगे कहाः मैं स्कूली शिक्षकों से अनुरोध करता हूँ कि वे नियमित कक्षाएं संचालित करने के लिए शारीरिक शिक्षा के पीरियड्स का इस्तेमाल न करें। खेलों और शारीरिक प्रशिक्षण को उनका उचित स्थान दिया जाए।

घायल हाथी की इलाज के लिए भुवनेश्वर ले जाने के दौरान मौत

ओडिशा। ओडिशा के सुंदरगढ़ जिले में ट्रेन की चपेट में आने से गंभीर रूप से घायल हुए एक जंगली हाथी की इलाज के लिए भुवनेश्वर ले जाते समय रास्ते में मौत हो गई। वन विभाग के एक अधिकारी ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। यह दुर्घटना बृहस्पतिवार की सुबह राउरकेला वन प्रभाग के सोनाखान और सागरा रेलवे स्टेशनों के बीच हुई।

राउरकेला के अनुभागीय वन अधिकारी जशबंत सेठी ने पीटीआई- को बताया, प्रारंभिक उपचार के दौरान पता चला कि हाथी के पिछले दाहिने पैर में चोट लगी थी।

जीएसटी का नया दौर: कराधान व्यवस्था क्रांति की ओर

-ललित गर्ग

भारतीय कराधान व्यवस्था में जीएसटी (वस्तु एवं सेवा कर) का आगमन एक ऐतिहासिक एवं क्रांतिकारी कदम था। इसने अप्रत्यक्ष करों के जटिल और उलझे जाल को जहां सरल बनाने का प्रयास किया, वहीं शासन एवं प्रशासन में पसरे भ्रष्टाचार एवं अफसरशाही को भी काफी सीमा तक नियंत्रित किया। सुधार, सुविधा एवं जनता को राहत देने के लिये किये इस प्रयास के बावजूद इसमें अनेक जटिलताएं एवं भारी-भरकम कराधान जनता को बोझिल किये हुए था, इस बात को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सरकार लम्बे समय से महसूस कर रही थी, इसीलिये इसवर्ष स्वतंत्रता दिवस के लालकिले के उद्बोधन में प्रधानमंत्री मोदी ने जीएसटी को अधिक सुगम एवं जनता के हित में करने की घोषणा की। अब सरकार ने इसे और सुसंगठित करते हुए केवल दो स्लैब्स में कराधान को समेट दिया है और कर भी काफी कम कर दिये हैं तो निश्चय ही यह उपभोक्ताओं और कारोबारियों दोनों के लिए राहतकारी है। इसमें मिडल एवं लोअर क्लास का व्यापक ध्यान रखते हुए उन्हें राहत दी गयी है, जिससे हर परिवार के पास ज्यादा खर्च करने लायक आमदनी बचेगी और लोग अन्य वस्तुओं एवं सेवाओं पर अधिक खर्च कर सकेंगे। इन बड़े एवं क्रांतिकारी सुधारों से खपत बढ़ेगी, विकास को तीव्र गति मिल सकेगी। निश्चित ही यह एक नए कराधान युग का सूत्रपात है, जिसमें कर प्रणाली अधिक पारदर्शी, सरल और उपयोगी बनने की ओर अग्रसर है।

जीएसटी काउंसिल की 56वीं बैठक के बाद घोषित जीएसटी की नई दरें 22 सितंबर से लागू करने करने की घोषणा की गई है। जिसमें अब 12 व 28 फीसदी के दो स्लैब को खत्म करके सिर्फ 5 व 18 फीसदी कर दिया गया है। कहा जा रहा है कि यह सरकार की ओर से आर्थिक सुधारों की कड़ी में एक नई पहल एवं आयाम है, जिससे जीएसटी को तार्किक बनाने व आम जनता को महंगाई से राहत देने का प्रयास हुआ है। वहीं दूसरी ओर विलासिता आदि वस्तुओं के लिये चालीस फीसदी का एक नया स्लैब जोड़ा गया है। विपक्ष इसे देर से उठाया गया कदम बता रहा है, तो सरकार आर्थिक सुधार की दिशा में बड़ा कदम। जीएसटी के बड़े सुधार को लेकर विपक्ष और विशेषतः कांग्रेस एवं भाजपा के बीच जो आरोप-प्रत्यारोप शुरू हुआ है, वह इसलिये औचित्यहीन, अतार्किक एवं व्यर्थ है, क्योंकि जीएसटी परिषद ने लम्बी विवेचना एवं आम सहमति से यह फैसला लिया है। वहीं कुछ अर्थशास्त्री इस कदम को ट्रंप के टैरिफ वॉर के परिप्रेक्ष्य में उठाया गया सुरक्षात्मक कदम मानते हैं। जिससे घरेलू खपत को बढ़ाकर निर्यात घाटे को कम किया जा सकेगा। वहीं कुछ लोग इसे नवरात्र में दिवाली से पहले सरकार का तोहफा बता रहे हैं।

अनेक कर दरों की जटिलता उपभोक्ताओं के लिए हमेशा भ्रम और बोझ का कारण रही। बार-बार की दर-संशोधन प्रक्रियाओं से व्यापार जगत में असमंजस की स्थिति बनी रहती थी। अब दो स्लैब्स की व्यवस्था से यह समस्या काफी हद तक समाप्त हो जाएगी। उपभोक्ता को वस्तुओं और सेवाओं पर अपेक्षाकृत सरल, न्यायोचित और संतुलित कर ढांचा मिलेगा। इससे न केवल मूल्य स्थिरता आएगी, बल्कि खरीदारी और उपभोग की प्रक्रिया भी सहज होगी। इससे व्यापार एवं उद्योग भी विकास की रफ्तार पकडेंगे। यह कहना अनुचित नहीं होगा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भ्रष्टाचार को नियंत्रित करने के लिए कई प्रभावी कदम उठाए गए हैं। डिजिटलाइजेशन, प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण, आधार लिंकिंग और पारदर्शी तंत्र ने व्यवस्था में विश्वास जगाया है। जीएसटी भी इसी कड़ी का एक क्रांतिकारी सुधार है जिसने ह्यवन नेशन, वन टैक्स की अवधारणा को मजबूत किया।

परंतु सच्चाई यह भी है कि जीएसटी विभाग आज भी भ्रष्टाचार की जकड़न से पूरी तरह मुक्त नहीं हो पाया है। छोटे व्यापारियों और उद्यमियों को आए दिन नोटिस, जांच और जटिल प्रक्रियाओं के जाल में उलझाया जाता है। कई बार भ्रष्ट तंत्र इन्हें भयभीत कर अनुचित लाभ उठाता है। यह स्थिति जीएसटी सुधार की भावना के विपरीत है। यदि वास्तव में कराधान को क्रांतिकारी मोड़ देना है, तो जीएसटी व्यवस्था को भी पूर्णतः भ्रष्टाचार मुक्त करना अनिवार्य होगा। यह किसी से छिपा नहीं है कि टैक्स विभाग लंबे समय तक भ्रष्टाचार का गढ़ बना रहा। जटिल कानून और अनेक कर-श्रेणियाँ इस भ्रष्टाचार को बढ़ावा देती थीं। लेकिन जब कराधान पारदर्शी और सरल होगा, तो अधिकारी और कारोबारी के बीच की अनावश्यक जटिलता भी कम होगी। इससे जनता एवं छोटे व्यापारियों का विश्वास व्यवस्था पर मजबूत होगा। अब आवश्यकता है कि सरकार जीएसटी प्रणाली को तकनीकी और प्रशासनिक स्तर पर और अधिक पारदर्शी बनाए। कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डिजिटल ट्रैकिंग का उपयोग कर कर चोरी रोकने के साथ-साथ अधिकारियों की मनमानी और रिश्वतखोरी पर भी अंकुश लगाया जा सकता है। करदाता के अधिकारों की रक्षा हो, ईमानदार व्यापारी को भयमुक्त वातावरण मिले और उपभोक्ता को राहत-तभी जीएसटी सचमुच क्रांति कहलाएगा। जीएसटी का नया दौर एक बड़ी राहत और परिवर्तन का संदेश लेकर आया है। अब अगला कदम यही होना चाहिए कि इसे भ्रष्टाचार से पूरी तरह मुक्त कर ईमानदार करदाताओं का विश्वास जीता जाए। तभी यह कहा जा सकेगा कि भारत ने वास्तव में सही अर्थों में एक राष्ट्र, एक कर और एक पारदर्शी कर व्यवस्था की ओर निर्णायक कदम बढ़ा लिया है।

भारत की आर्थिक यात्रा में कुछ फैसले ऐसे होते हैं, जो केवल नीतिगत बदलाव नहीं, बल्कि युगांतरकारी मोड़ साबित होते हैं। वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) में हालिया सुधार उसी दिशा में उठाया गया एक साहसिक कदम है। कराधान व्यवस्था को सरल बनाने और जनता को सीधी राहत पहुँचाने की दिशा में यह सुधार महज सरकारी निर्णय नहीं, बल्कि एक लोककल्याणकारी दृष्टि का प्रमाण है। आजादी के बाद से भारत में कर-व्यवस्था जटिलताओं, बहुस्तरीय बोझ और भ्रष्टाचार की दलदल में फंसी रही। छोटे व्यापारी हों या आम उपभोक्ता, हर कोई अप्रत्यक्ष करों की इस भूलभुलैया से परेशान था। मोदी सरकार ने जीएसटी को लागू करके पहले ही इस दिशा में बड़ा कदम उठाया था, लेकिन अब इसे और सरल बनाना तथा दो स्लैब्स तक सीमित करना एक क्रांतिकारी सुधार है। इससे न केवल उपभोक्ताओं पर बोझ घटेगा, बल्कि व्यवसाय करने की सुगमता भी बढ़ेगी। अर्थव्यवस्था का असली इंजन जनता की जेब है। जब उपभोक्ता को राहत मिलती है, उसके हाथ में थोड़े अधिक पैसे बचते हैं, तो खपत बढ़ती है। यही खपत उद्योगों को गति देती है, उत्पादन में उछाल लाती है और अंततः रोजगार के नए अवसर पैदा करती है। जीएसटी सुधार का सबसे बड़ा असर यही होगा कि यह आर्थिक गतिविधियों को नये पंख देगा और इससे भारत दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थ-व्यवस्थ बन सकेगा।

किसी भी लोकतांत्रिक शासन का मूल्यांकन इस बात से होता है कि वह अपने नागरिकों के हितों को किस हद तक प्राथमिकता देता है। मोदी सरकार ने जीएसटी सुधार के जरिए यह स्पष्ट किया है कि उनकी नीतियाँ महज आँकड़ों का खेल नहीं, बल्कि जनजीवन को आसान बनाने की कोशिश हैं। यह सुधार जनता को केवल आर्थिक ही नहीं, बल्कि मानसिक राहत भी देता है। हालाँकि सुधार के साथ चुनौतियाँ भी कम नहीं हैं। राज्यों को राजस्व हानि की भरपाई, छोटे कारोबारियों को नई व्यवस्था में सहज बनाना और कर-प्रशासन में पारदर्शिता बनाए रखना, ये सब गंभीर प्रश्न हैं। लेकिन यदि इन्हें दूर किया गया तो यह सुधार भारत को एक मजबूत, पारदर्शी और विकासोन्मुख अर्थव्यवस्था की ओर ले जाएगा। जीएसटी सुधार को जनता के लिए एक उपहार कहना गलत नहीं होगा। यह केवल कराधान का बदलाव नहीं, बल्कि जनता के जीवन स्तर को बेहतर बनाने की पहल है। यह निर्णय बताता है कि शासन की नीतियाँ केवल सत्ता चलाने के लिए नहीं, बल्कि जनता को राहत देने और देश को विकास की राह पर तेजी से आगे बढ़ाने के लिए बनाई गई हैं। लेकिन यहां यह देखना ज्यादा जरूरी है कि इस बदलाव से वास्तव में आम उपभोक्ता को कितना फायदा होता है। यह इस बात पर निर्भर करेगा कि उद्योग कर कटौती का लाभ उपभोक्ता तक कैसे पहुंचाते हैं। साथ ही नियामक कितनी सतर्कता से अनुपालन सुनिश्चित करते हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 79वें स्वतंत्रता दिवस पर जीएसटी सुधार के वायदे को किया पूरा

अशोक भाटिया

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा भारत के लोगों को वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) प्रणाली में सुधार के रूप में दिया गया दिवाली उपहार, संभवतः तीन स्तंभों - संरचनात्मक सुधार, दरों को युक्तिसंगत बनाना, और जीवन को आसान बनाना - पर आधारित होगा तथा इसमें वर्तमान पांच-दर प्रणाली से दो-दर प्रणाली की ओर बदलाव शामिल हो सकता है।भारत के 79वें स्वतंत्रता दिवस पर नई दिल्ली के लाल किले से अपने भाषण में श्री मोदी ने कहा था कि सरकार अगली पीढ़ी के जीएसटी सुधार लाएगी, जिससे आम आदमी पर कर का बोझ कम होगा। यह आपके लिए दिवाली का तोहफा होगा। पीएम मोदी ने दिवाली के जिस गिफ्ट को आम आदमी को देने का वादा किया था, उसे नवरात्र के पहले दिन ही देने की तैयारी की जा रही है। जीएसटी परिषद ने त्योहारी सीजन पर नए जीएसटी ढांचे को लागू करने की तैयारी पूरी कर ली है। परिषद के फैसले से आम लोगों, किसानों और कारोबारियों को बड़ी राहत मिलेगी। नई दरें नवरात्र के पहले दिन (22 सितंबर) से लागू होंगी। 22 सितंबर से नए जीएसटी स्लैब को लागू किए जाने के पीछे एक अहम उद्देश्य यह भी है कि 22 सितंबर से नवरात्र शुरू हो रहे हैं। ऐसे में त्योहारी सीजन में लोग खरीदारी करते हैं। सरकार का मानना है कि अगर नवरात्र के पहले दिन से छूट का प्रावधान लागू किया जाता है तो उससे ग्राहकों को लाभ होगा। इससे बाजार को भी गति मिलेगी। खासकर ऑटोमोबाइल क्षेत्र को व्यापक लाभ हो सकता है। इसलिए सरकार चाहती है कि जीएसटी परिषद में सहमति बनने के बाद जीएसटी के दो स्लैब लागू करने में ज्यादा देरी न हो। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कर दर में कटौती की घोषणा करते हुए कहा कि अब से जीएसटी के केवल दो चरण होंगे। देश भर में सरकार के विज्ञापन अभियान में भी यही कहा गया है। लेकिन यह सच नहीं है। नवीनतम दर में कटौती से पहले, वस्तु और सेवा कर के छह चरण थे। शून्य प्रतिशत, 5 प्रतिशत, 12 प्रतिशत, 18 प्रतिशत, कर 28 प्रतिशत और 40 प्रतिशत अधिक था। इनमें से 12% और 28% को हटा दिया गया। इसका मतलब है कि छह चरणों में से केवल दो चरणों को हटाया जाएगा और अब से चार चरणों में कर लगाया जाएगा। इसमें भी 28 प्रतिशत में से कई 40 प्रतिशत तक चले जाएंगे। केवल एक चरण होना आदर्श वस्तु एवं सेवा कर है। हमारे जैसे देश में, यह असंभव है। हालांकि, सभी घटकों को अधिकतम दो चरणों में विभाजित करना आवश्यक था। इस संदर्भ में, माल और सेवा कर का मूल मसौदा। विजय केलकर की समिति ने भी दो चरणों की सिफारिश की थी और कई विशेषज्ञ अभी भी यही बात कहते हैं। सुधार का दावा करने वाली सरकार ने इससे मुंह मोड़ लिया है। अगर आप इस टैक्स के वास्तविक लाभों का अनुभव करना चाहते हैं, अर्थव्यवस्था के उछाल का अनुभव करना चाहते हैं, तो G. S. TÔx के चरण दो से अधिक नहीं होने चाहिए।

कुछ लोगों का मानना है कि भले ही सरकार दो करने का दावा करती है, लेकिन यह एक धोखा है। वित्त मंत्री के बयान में वस्तु/सेवा कर के तीन महत्वपूर्ण घटकों- पेट्रोल, डीजल और शराब को वस्तु/सेवा कर में शामिल करने का उल्लेख नहीं है। अर्थात, सरकार के पास अभी भी ईंधन की कीमत को छूने की हिम्मत नहीं है, जिस पर परिवहन लागत, जो सभी वस्तुओं/सेवाओं के घटकों की कीमतों को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ऐसी स्थिति में, केवल सरकार और विचारक ही जो हुआ उसे 'प्रमुख सुधार' कह पाएंगे। दूसरों ने कहा कि इन कथित सुधारों ने इन कथित सुधारों को जन्म दिया है। यह खुश होना वांछनीय है कि सेवा कर में हास्यास्पद असामंजस्य कुछ हद तक कम हो जाएगा।

यानी 'बन-पाव' पर 5 फीसदी, काजल पर 5 फीसदी, लेकिन बन-मास्क पर 18 फीसदी, जो कई लोगों के नाश्ते का एक घटक है। या स्कूल स्तर पर आवश्यक स्नैक्स पर 5 फीसदी, मासिक धर्म के दौरान आवश्यक सैनिटरी पैड पर 12 फीसदी और इसी उद्देश्य के लिए इस्तेमाल होने वाले टैम्पोन पर 18 फीसदी।नवीनतम तथाकथित सुधारों में चिकित्सा बीमा आदि पर करों में कमी आएगी। बेचारा। अब यह टैक्स फ्री होगा। सबसे बड़ा बदलाव जीवन बीमा और स्वास्थ्य बीमा प्रीमियम पर टैक्स में होगा। इन दो आवश्यक सेवाओं पर 18 प्रतिशत का कर लगाना मूल रूप से मूर्खतापूर्ण है। हमारे पास पहले से ही चिकित्सा बीमा चाहने वाले लोगों की एक छोटी संख्या है। इसने इस क्षेत्र की कमर 18 प्रतिशत तक तोड़ दी। यह अब सीधा होना चाहिए। क्योंकि ये बीमा प्रीमियम अब टैक्स फ्री होगा। वही मूर्खतापूर्ण कहर सिनेमाघरों में पॉपकॉर्न-नामित मकई के लट्टे के बारे में था। पहले मक्के के लट्टे साधारण होने पर 5 प्रतिशत, नमकीन लट्टे पर 12 प्रतिशत और कारमेलाइज्ड लाठियों पर 18 प्रतिशत कर देना पड़ता था। अब, हम पांच प्रतिशत में सभी लाठियों से छुटकारा पा लेते थे। अब, सभी लाठियां घटाकर पांच प्रतिशत कर दी जाएंगी। बढ़ते तापमान के कारण, एयर कंडीशनर कोई विलासिता नहीं है। रेल मंत्रालय का कहना है कि मुंबई में सभी लोकल ट्रेनें वातानुकूलित होनी चाहिए। उपभोक्ता वस्तुएं 5 फीसदी के दायरे में आएंगी। इसमें आपका स्वागत है।

हालांकि, ये तथाकथित सुधार इस स्वागत को एकमुश्त करने की अनुमति नहीं देते हैं। उदाहरण के लिए, कारों और होटलों के लिए कर संरचना 40 प्रतिशत होगी और 7,500 रुपये से अधिक शुल्क लेने वाली होटल सेवाओं पर भी कर लगेगा। हमारी सरकार को अभी तक पता नहीं है कि ऐसी कार लेने वाले और महंगे होटलों में रहने वाले अमीर नहीं हैं। हमारे पास सड़कों और परिवहन की गुणवत्ता को देखते हुए, बहुत से लोग सुरक्षा कारणों से हाल ही में बड़ी कारें खरीदते हैं। अब लागत बढ़ेगी। एक खामी भी है। इसका मतलब है कि 1200 सीसी इंजन की क्षमता वाली कारों पर ज्यादा टैक्स लगेगा, इसलिए इसमें कोई शक नहीं है कि 1150 सीसी क्षमता वाली कारें जल्द ही आएंगी। दूसरा मुद्दा स्टार होटलों का है। यह सच है कि इसका उपयोग अमीरों द्वारा किया जाता है। लेकिन यह भी सच है कि स्टार होटलों में आम होटलों की तुलना में अधिक रोजगार की क्षमता होती है। एक पांच सितारा होटल सीधे कम से कम 500 लोगों को रोजगार देता है और समान संख्या में अप्रत्यक्ष नौकरियां पैदा करता है। इसलिए अगर हम रोजगार सृजन, खरीदारी और सेवाओं को प्रोत्साहित करना चाहते हैं, तो हमें बड़ी कारों या बड़े होटलों की जरूरत है। ऐसा लगता है कि 'अमीरों को थप्पड़ मारो' मानसिकता के कारण ऐसा नहीं हो रहा है। सरकार का अब तक का सबसे बड़ा आर्थिक सुधार नोटबंदी रहा है। इसके पीछे मकसद अमीरों को सबक सिखाना था। वास्तव में, किसे फायदा हुआ और कौन दिवालिया हो गया, इसका इतिहास ताजा है। इस मानसिकता के दोहराव की संभावना है। भारत सरकार की तरफ से GST में किए गए बदलाव को लेकर कांग्रेस भी क्रेडिट लेने की जुगाड़ में है । विपक्ष के नेता राहुल गांधी अपने कई पुराने ट्वीट सोशल मिडिया पर शेयर कर रहे हैं।कांग्रेस का कहना है कि आठ साल बाद बीजेपी को अपनी गलती का अहसास हुआ है, जबकि कांग्रेस इसका पहले से ही विरोध कर रही है। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने अपने उन पुराने ट्वीट को शेयर किया, जिनमें उन्होंने लिखा था कि कांग्रेस 18% CAP के साथ एक रेट के लिए संघर्ष जारी रखेगी। उन्होंने कहा था कि अगर बीजेपी ये काम नहीं करेगी, तो कांग्रेस करके दिखाएगी। राहुल गांधी ने सोशल मिडिया अकाउंट पर ऐसे ट्वीट शेयर किए जिसमें एक ट्वीट 8 साल पुराना है और दुसरा 9 साल पुराना है। 2017 में शेयर किए गए ट्वीट में लिखा था कि भारत को गब्बर सिंह टैक्स नहीं, सरल GST चाहिए। कांग्रेस और देश की जनता ने लड़कर कई वस्तुओं पर 28% टैक्स खत्म करवाया है। 18% CAP के साथ एक रेट के लिए हमारा संघर्ष जारी रहेगा। अगर भाजपा ये काम नहीं करेगी, तो कांग्रेस करके दिखाएगी। वहीं 2016 के ट्वीट में लिखा था कि जीएसटी दर पर 18% की सीमा सभी के हित में है।

इस पर पवन खेड़ा ने कहा कि शुरू से राहुल जी 2 स्लैब्स की बात कर रहे हैं। एक सिंप्लिफिकेशन होना चाहिए। हमारी सलाह मानने में 9 साल लग गए। वाकई इनकी समझ कम है या घमंड है। कांग्रेस नेता पी. चिदंबरम ने कहा कि मैं आठ साल बाद सरकार को अपनी गलती का एहसास होने पर उसकी सराहना करता हूं। उन्होंने कहा कि आठ साल तक बीजेपी ने मध्यम वर्ग और गरीबों को निचोड़ा है। कांग्रेस नेता ने कहा कि उस समय हमने सलाह दी थी कि ऐसा कर नहीं लगाया जाना चाहिए, लेकिन उस समय न तो प्रधानमंत्री और न ही मंत्रियों ने हमारी बात सुनी। उन्होंने कहा कि मैंने संसद में भी आवाज उठाई लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। चिदंबरम ने कहा कि GST की दरें 12% और 18% से घटाकर घटाकर 5% कर दी गई हैं। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने अपने सोशल मिडिया पर एक पोस्ट शेयर करते हुए कहा कि कांग्रेस लंबे समय से जीएसटी 2.0 की वकालत करती रही है। बीजेपी पर निशाना साधते हुए कहा कि जीएसटी परिषद की बैठक से पहले पीएम मोदी ने 15 अगस्त को जीएसटी की दरों को घटाने की बात कही थी। उन्होंने बीजेपी पर सवाल उठाते हुए कहा कि क्या जीएसटी परिषद अब केवल एक औपचारिकता बनकर रह गई है? कांग्रेस नेता ने कहा कि पीएम को कांग्रेस ने 2017 में भी ध्यान दिला दिया कि उनके द्वारा लिया गया निर्णय गलत है। उन्होंने कहा कि इसे इसे गुड एंड सिंपल टैक्स कहा गया था, लेकिन यह ग्रोथ सप्रेसिंग टैक्स साबित हुआ।अब यह तो धीरे -धीरे ही पता चलेगा कि आम जनता को दिवाली ला कितना गिफ्ट मिला है।

सेंधवा में अनंत चतुर्थी के चल समारोह का गौरव पूर्ण इतिहास

-नरेंद्र तिवारी 'पत्रकार'

सेंधवा बड़वानी जिले के सबसे बड़े शहर सेंधवा में गणेश उत्सव इतिहास काफी पुराना है। यह उत्सव शहर और क्षेत्र के निवासियों का सबसे बड़ा सांस्कृतिक उत्सव बन गया है। शनिवार की रातभर शहर की सड़को पर झिलमिलाती झांकियों का काफिला ढ़ोल ताशो और डीजे की धुन पर थिरकने को तैयार रहेगा। समय के साथ उत्सव में काफी बदलाव होते जा रहे है। अनंत चतुर्थी का यह चल समारोह शहर के क्लाकारों, करतबबाजो, पहलवानो को अपनी कला के प्रदर्शन का अवसर प्रदान करता था। गणेश उत्सव और चल समारोह ने शहर के कई नामी लोगो के नाम को रोशन किया।

शहर के 74 वर्षीय सामजिक कार्यकर्ता बद्री प्रसाद शर्मा के अनुसार सेंधवा में गणेश उत्सव की शुरूवात काफी पुरानी है उनकी स्मृति के अनुसार 1960 में रामचंद्र मुकरदम ने गणेश प्रतिमा की स्थापना की थी। उन्होंने बैलगाडी पर सजा कर अनंत चतुर्थी को विसर्जन किया था। इसी दौरान भीमराव लाइन मेन नामक व्यक्ति ने मोतीबाग चौराहे के दाजी भवन पर गणपति जी को वाहन मुसक पर विराजित कर शिव-पार्वती की परिक्रमा की झांकी का प्रदर्शन किया था। बकौल बद्रीप्रसाद शर्मा शहर के सार्वजनिक गणेश उत्सव मंडल की यह शुरूवात मानी जा सकती है। महाराष्ट्र से सटा और इंदौर से 150 किलोमीटर की दुरी पर स्थित इस शहर में इन दोनों ही स्थानों के संस्कृति का प्रभाव पड़ा। इंदौर में मीलों द्वारा चलित झाँकिया निकालने की परम्परा से प्रभावित शहर की तत्कालीन गड्डे वाली जिनिंग (सत्यम कोटेक्स) के मालिक बसंत अग्रवाल द्वारा स्थानीय जिनिंग मजदूरों एवं व्यापारियों के सहयोग से वर्ष 1961 से नियमित चलित झांकी की शुरूवात की जो कुछ बरसो तक चलती रही। इस परम्परा को हिन्दू समाज सेवा संगठन के बैनर तले खेमराज सेठ मित्तल ने अपने हाथों में लिया। हिन्दूसमाज सेवा संगठन अपनी झांकी में धार्मिक दृश्यों का चित्रण करता था। खेमराज सेठ मित्तल के पुत्र मुकेश मित्तल के अनुसार करीब 70 के दशक में उनके पिता ने हिन्दू समाज सेवा संगठन के बैनर तले चलित झंकियों की आरम्भ किया। झंकियों के निर्माण के लिए नागलवाड़ी के प्रसिद्ध मूर्तिकार उत्तम राठौड़ झंकियों के लिए मूर्तियों का निर्माण करते थै। धामनोद के मांगीलाल पेंटर कलर एवं ब्रश से बेक ग्राउंड बनाते थै। इक बार पुष्कर विमान लम्बे चेसीस पर बना दिया गया जिसके शहर के मुख्य मार्गो से निकलने में काफी परेशानी का सामना करना पड़ा।

झंकियों की इस परम्परा में महाराष्ट्र समाज सेवा संगठन का उदय भी लगभग इसी समय का है। इस संगठन के कलाकार आर्थिक तंगी के दौर में अपने हाथों से मूर्तियों, पोस्टरो और झंकियों को संजाने का कार्य करते थै, इस संगठन द्वारा शहर में कलात्मक झंकियों का प्रदर्शन लम्बे दौर तक किया गया। शुरूवाती दौर में यहां कर्मा सर जो स्वयं इक अध्यापक होकर भी इस झांकी के लिए पेंटिंग करते थै, गोविन्द पेंटर भी इसी संगठन की देन है जो पेशे से चालक थै किंतु अनंत चतुर्थी की चलित झांकी निर्माण के लिए कामकाज छोड़ झांकी निर्माण में जुट जाते थै। हरी चौधरी, हिरामन वारुले अप्पा, बापू डैनी, प्रकाश निकुम्भ, पुरुषोत्तम रावल भी झंकियों में महती भूमिका निभाते थै। गोविन्द शर्मा अपनी जोशीली आवाज में महाराष्ट्र समाज सेवा संगठन की झांकी प्रस्तुतीकरण करते थै। वर्ष 1984 में बनी कालंका माता की झांकी आज भी शहर के लोगो याद है। पालीवाल समाज सेवा संगठन भी इस कढ़ी में जुडा जिन्होंने चलित और स्थाई झांकियों का सिलसिला लम्बे समय तक जारी रखा। इस कढ़ी में जय भवानी एकता संगठन का 1980 दशक में खासे जोश के साथ उतरा जिन्होंने सार्वजनिक गणेश उत्सव मंडल में स्थानीय कलाकारों एवं बाहर से बुलाई चलित झंकियों का निर्माण किया। शंकर सैनी, जयस जैन, सुभाष मित्तल, कालू कामदार, बंसीलाल ठाकरे, मुकेश अग्रवाल सहित अनेको कार्यकर्ता झांकी निर्माण में महती भूमिका निभाते थै। दिनेश गंज दारु गोदाम एकता संगठन जो अब निमाड़ का सबसे बड़ा गणेश उत्सव पांडाल विगत बरसो से बना रहा है। चलित झांकियों में भी भाग लेता था। रम्मू काका, घनश्याम शर्मा, गुल्ली शर्मा, संजय यादव दिनेश गंज की चलित झांकी का प्रतिनिधित्व करते थै। महाराज गकू एकता संगठन, युवा हिन्दू समाज सेवा संगठन, जवाहर गंज मित्र मंडल, आजाद नुककड़, प्रेस नुककड़ मोतिबाग भी समय के साथ उभरने वाले गणेश मंडल है।बद्री प्रसाद शर्मा के अनुसार चल समारोह 1969 तक मौलाना आजाद मार्ग से होता हुआ एबी रोड, गुरुद्वारा मार्ग पर पहुँचता था। किसी भी धार्मिक स्थानों को ढकने की परम्परा नहीं थी। गुलाल का प्रचलन नहीं था। स्थानीय क्लाकारों के ढप (चमड़े से बना बाजा) बजते थै उसी पर लाठिया घुमाई जाती थी अन्य करतब किये जाते थै। अखाड़े सभी संगठन के होते थै। खेमराज सेठ साईकिल से प्रदर्शन करते थै। सुरेश ब्रुसली जो पेशे से चालक थै उन्होंने शहर के चल समारोह में नान चाकू के प्रदर्शन की शुरूवात की थी। मोहन गुर्जर दांतो से साईकिल घुमाने का करतब दिखाते थै। गणेश उत्सव आरम्भ होने के पूर्व अखाड़े अपनी तैयारियां शुरू कर देते थै जिस संगठन का अखाडा अव्वल एवं श्रेष्ट प्रदर्शन करता शहर में उनका नाम होता था। समय के साथ अखाड़ों का लोप होता जा रहा है। गुलाल उड़ाने का प्रचलन बढ़ने से चल समारोह में रूचि कम हो गयी है। डीजे पर फुहड नाच ने भी सांस्कृतिक उत्सव महत्ता को कमजोर किया है। शहर का गणेश उसत्व काफी चर्चित से इस उत्सव से जुड़े अच्छे बुरे अनुभव शहर ने भोगे है। अब भी यह उसत्व शहर का सबसे बड़ा सांस्कृतिक उत्सव है। वर्तमान में जहाँ 10 दिवसीय गणेश उत्सव की परम्परा को दिनेशगंज एकता संगठन संजय यादव के नैतृत्व में विशाल पांडाल के निर्माण के साथ इस परम्परा बखूबी निर्वाह करता आ रहा है। 6 सितम्बर 2025 को शहर में 25 से अधिक झाँकिया धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विषयों के साथ चल समारोह का हिस्सा बनने जा रही है। बरमुड़ा अखाडा एवं अम्बेडर युवा शक्ति अखाडा अपने शानदार करतबो की प्रस्तुति देगा। वहीं श्रीराम मित्र मंडल पुराना बस स्टैंड इक लौटा जल सभी समस्याओ का हल, मौसम चौराहा एकता संगठन संभाजी महाराज, विकास आर्य मित्र मंडल नर्मदा मैय्या, सालासर बालाजी मित्र मंडल महाकाल मंदिर उज्जैन, जय भवानी मित्र मंडल मिशन सिंदूर, बागेश्वर सरकार मित्र मंडल प्रेमानन्द महाराज, संतोषी माता मित्र मंडल लव जिहाद, जवाहर गंज मित्र मंडल कृष्ण लीला, आजाद नुककड़ कृष्ण लीला, विवेक तिवारी मित्र मंडल सीताहरण, किला गेट मित्र मंडल छावा फिल्म, हर सिद्धि गणेश मंडल रामेश्वरम, जोगवाडा रोड मित्र मंडल राम केवट विषय पर झाँकियां प्रस्तुत करने जा रहे है। अनंत चतुर्थी का उत्सव हमारी सांस्कृतिक परम्परा को मजबूत करने का अवसर है।

6 सितंबर अंतर्राष्ट्रीय गिद्ध जागरूकता दिवस

अंतर्राष्ट्रीय गिद्ध जागरूकता दिवस, जिसका उद्देश्य गिद्धों की सभी प्रजातियों और उनकी घटती संख्या के बारे में जागरूकता पैदा करना है, 2009 में दक्षिण अफ्रीका के बड्र्स ऑफ प्रे कार्यक्रम और यूनाइटेड किंगडम के हॉक कंजरवेंसी ट्रस्ट के सहयोग से शुरू किया गया था। तब से, प्रकृति प्रेमी गिद्धों की घटती संख्या को देखते हुए, सितंबर के पहले शनिवार को दुनिया भर में अंतर्राष्ट्रीय गिद्ध जागरूकता दिवस के रूप में मनाया जाता है। देश में हर स्तर पर प्रदूषण दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है। आधुनिक उपकरणों, कारखानों, वनों की कटाई, परमाणु परीक्षण, गोला-बारूद, बढ़ते युद्ध जैसे हालात और बढ़ते औद्योगीकरण के कारण आकाश-पाताल- पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण-पृथ्वी-प्रकृति पूरी तरह से अत्यंत बिकट स्थिति में आ गई है। इसके कारण, हर जगह भारी मात्रा में प्रदूषण देखने को मिलता है। यही परिणाम आज मनुष्य, पशु-पक्षी और सभी जीव-जंतु भुगत रहे हैं। आज बढ़ते प्रदूषण के कारण पक्षियों को आकाश में उड़ान भरने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। वनों की कटाई के कारण जंगल में जानवरों का जीवित रहना बहुत कठिन हो गया है और अब प्रकृति प्रेमी गिद्ध, जो प्रकृति के संतुलन को बनाए रखने के लिए जिम्मेदार हैं, आज मौत के मुंह में जा रहे हैं। इसे बहुत ही भयावह स्थिति कहा जा सकता है। गिद्ध मुख्य रूप से मृत जानवरों का मांस खाकर प्रकृति के संतुलन को बनाए रखने के लिए जिम्मेदार हैं। इसलिए, गिद्धों ने अपनी भूमिका बखूबी निभाई है और प्रकृति को स्वस्थ रखते हुए पृथ्वी, मानवता और सभी जीवित प्राणियों की रक्षा की है। लेकिन भारत के लिए चौंकाने वाली खबर यह है कि भारत में गिद्धों की संख्या में 90 प्रतिशत की कमी आई है, जो दशार्ता है कि भारतीय प्रकृति बहुत बड़े खतरे में पड़ गई है। इसके लिए आज की स्थिति में गिद्धों को बचाना समय की मांग है। गिद्धों को मौत के मु में धकेलने का काम स्वयं मानवता ने किया है। भारत में गिद्धों की 9 प्रजातियां हैं, जिनमें से 6 भारतीय और 3 प्रवासी हैं। 1980 के दशक तक देश में गिद्धों की संख्या 4 करोड़ से भी ज्यादा थी। लेकिन, डाइक्लोफेनाक जैसी जहरीली दवाओं के कारण सिर्फ. 15-20 सालों में ही 90 प्रतिशत गिद्ध मर गए। कुछ प्रजातियाँ तो विलुप्त होने के कगार पर हैं। जानवरों को दी जाने वाली डाइक्लोफेनाक दवा गिद्धों की मौत का कारण बन गई है। इसी के चलते सरकार ने 2006 में डाइक्लोफेनाक दवा पर प्रतिबंध लगा दिया था। हालाँकि, चूँकि इस दवा का इस्तेमाल अब भी हो रहा है, इसलिए भारत सरकार ने 2015 में इसके उत्पादन पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगा दिया। हालाँकि डाइक्लोफेनाक पर प्रतिबंध लगा दिया गया है, लेकिन जानवरों पर दूसरी नॉन-स्टेरॉइडल एंटी-इंफ्लेमेटरी दवाओं का इस्तेमाल होता है और इस दवा का इस्तेमाल भी गिद्धों के लिए उतना ही खतरनाक है। यानी हम जानवरों को जो भी दवाएँ देते हैं, वो सभी गिद्धों की मौत का कारण बन रही हैं। इसलिए, समय आ गया है कि मरे हुए जानवरों का मांस खाकर प्रकृति के संतुलन को दुरुस्त रखने वाले प्रकृति के मित्र को बचाया जाए। 25-30 साल पहले मरे हुए जानवरों का मांस गिद्धों के लिए पौष्टिक और पोषक होता था। लेकिन आधुनिक युग में पिछले कुछ सालों में जानवरों को कई तरह की दवाइयां और इंजेक्शन देकर उन्हें कई बीमारियों से बचाया गया है। कुछ जानवरों में प्रजनन और दूध की मात्रा बढ़ाने के लिए बड़ी मात्रा में दवाइयों और इंजेक्शन का इस्तेमाल किया जा रहा है। लेकिन प्रकृति की रक्षा करने वाले गिद्धों पर इसका उल्टा असर हो रहा है। क्योंकि जानवरों को दी जाने वाली दवाइयां जानवरों के मरने के बाद जहरीली हो जाती हैं। इन मरे हुए जानवरों को गिद्ध खा जाते हैं और कई बीमारियों से ग्रस्त होकर उन्हें मौत से जूझना पड़ता है। इस वजह से प्रकृति के मित्र गिद्धों की संख्या में 90 फीसदी की कमी आई है। यह बेहद चिंताजनक और गंभीर मामला है। एक जानकारी के अनुसार 1993 से 2007 के बीच सफेद चोंच वाले गिद्धों, जो कि एक भारतीय प्रजाति है, उनकी संख्या 99.9 फीसदी तक खत्म हो गई है अर्थात गिद्धों की संख्या में कमी प्रकृति की रक्षा की दृष्टि से अत्यंत चिंताजनक विषय है। इसके कारण गिद्धों की अधिकांश प्रजातियों के विलुप्त होने का खतरा मंडरा रहा है; प्रकृति के भारतीय मित्र को बचाना समय की मांग है। भारत में 2020 से 2025 तक गिद्ध संरक्षण की कार्ययोजना के अनुसार, महाराष्ट्र वन विभाग, भारतीय गिद्ध फाउंडेशन के साथ मिलकर गिद्ध संरक्षण प्रजनन केंद्र स्थापित करने का प्रयास करने जा रहा है। मैं इसका स्वागत करता हूँ, जो अत्यंत हर्ष का विषय है। अंतर्राष्ट्रीय गिद्ध जागरूकता दिवस के अवसर पर, भारत सरकार को प्रकृति-मित्र गिद्धों को बचाने के लिए प्रयास करने चाहिए, और साथ ही, संपूर्ण राज्य सरकारों और केंद्र शासित प्रदेशों के वन विभागों को गिद्धों को बचाने के लिए युद्ध स्तर पर प्रयास करने की तत्काल आवश्यकता है। इससे प्रकृति को जीवंत बने रहने में बहुत मदद मिलेगी और साथ ही, हम प्रदूषण पर काबू पाने में भी सफल होंगे। सभी को यह याद रखना चाहिए कि अगर जंगल सुरक्षित है, तो प्रकृति सुरक्षित है, प्रकृति सुरक्षित है, जानवर सुरक्षित हैं और जानवर सुरक्षित हैं, तो हम सब सुरक्षित हैं। क्योंकि मनुष्य बुद्धिमान प्राणी है। इसलिए प्रकृति-मित्र गिद्धों को बचाने के लिए युद्धस्तर पर प्रयास किए जाने चाहिए।

न्यू बूगी वूगी अकेडमी के बच्चों ने शिक्षक दिवस पर किया कार्यक्रम का आयोजन

पटना। न्यू बूगी वूगी अकेडमी द्वारा शिक्षक दिवस के उपलक्ष्य में सिन्हा लाइब्रेरी रोड स्थित अदिति कम्युनिटी हॉल में भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संस्थान के बच्चों ने अपनी रंगारंग प्रस्तुतियों और नृत्य कौशल का प्रदर्शन कर शिक्षकों के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम की विशेषता यह रही कि बच्चों की माताओं ने भी मंच पर अपनी प्रस्तुतियों से शिक्षकों के प्रति स्नेह और सम्मान प्रकट किया। बच्चों और अभिभावकों के इस साझा प्रदर्शन ने उपस्थित लोगों का दिल जीत लिया। कार्यक्रम आयोजक एवं न्यू बूगी वूगी अकेडमी के निदेशक अनिल राज ने कहा कि आज का यह कार्यक्रम समाज के निमार्ता शिक्षकों को समर्पित है। शिक्षक ही वह प्रकाश पुंज हैं जो बच्चों के जीवन को दिशा प्रदान करते हैं। उन्होंने कहा कि शिक्षक दिवस हमें यह याद दिलाता है कि शिक्षा ही सबसे बड़ा धन है। आज के बच्चों ने जिस उत्साह से कार्यक्रम प्रस्तुत किया है, वह निश्चित रूप से प्रेरणादायक है। वहीं संस्थान के शिक्षकों ने भावुक होते हुए कहा कि छात्रों और अभिभावकों का यह सम्मान हमारे लिए सबसे बड़ी पूंजी है।

आशादीप विद्यामंदिर हाईस्कूल में हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया शिक्षक दिवस

पालघर(उत्तरशक्ति)। जिले के बोईसर शहर (पू.) अंतर्गत धनानी नगर क्षेत्र स्थित आशादीप विद्यामंदिर हाईस्कूल सेमी अंग्रेजी /हिन्दी माध्यम में शिक्षक दिवस का कार्यक्रम सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ हर्ष व उत्साह भरे वातावरण के बीच सम्पन्न हुआ। बताया दें कि शुक्रवार 5 सितम्बर 2025 को पालघर जिले की अधिकांश शिक्षण संस्थाओं में डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्मदिवस पारंपरिक ढंग से मनाया गया। आशादीप विद्यालय में (शिक्षकदिवस) कार्यक्रम की शुरूवात माँ सरस्वती व राधाकृष्णन के चित्र पर माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि अर्पित कर दीप प्रज्ज्वलित के बाद माँ सरस्वती की वंदना व अतिथियों के स्वागत के साथ हुई। इस कार्यक्रम में विद्यालय के सभी शिक्षक, शिक्षिकाएं, विद्यार्थी व अभिभावक उपस्थित रहे। इस मौके पर उपस्थित सभी गणमान्य लोगों ने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए विद्यालय के विकास में हर सम्भव सहायता का आश्वासन देते हुए कहा कि शिक्षा जीवन जीने की कला है, केवल किताबों को पढ़कर परीक्षा पास करना हमारा उद्देश्य नहीं होना चाहिए। विद्यार्थी को विनम्र और अनुशासन प्रिय होने के साथ ही अपने माता पिता गुरूजन एवं बड़ों का आदर सम्मान भी करना चाहिए। हमारी शिक्षा जितनी ज्यादा व्यवहारिक होगी हमारा उतना ही अच्छा चतुर्दिक विकास होगा। शिक्षक दिवस के अवसर पर विद्यालय की दशवी कक्षा के विद्यार्थियों ने शिक्षक की भूमिका का निर्वाह करते हुए कक्षा तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम व संगोष्ठी का संचालन किया। सभी शिक्षकों को विद्यार्थियों ने अपने हाथों से बनाये गये चित्र,पुष्प, कलम डायरी भेंट स्वरूप देकर सम्मानित कर शिक्षक दिवस की बधाई एवं शुभकामनाएँ दी। विद्यालय के मुख्याध्यापक हरिओम शरण मिश्र ने संस्था की प्रगति और आगामी दिनों में शिक्षण संस्थान में गुणात्मक सुधार के लिए आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता के आधार पर पूरा करने का आश्वासन देते हुए सभी का आभार ज्ञापन किया।कार्यक्रम का नियोजन व व्यवस्थापन सहायक शिक्षिका जया शरद कुरकुटे ने किया।

पार्कसाईट के नवयुवक मित्र मंडल के राजा का दर्शन में भक्तों की भीड़

मुंबई (उत्तरशक्ति)। नवयुवक मित्र मंडल संलग्न उत्तर भारतीय समाज सेवा संघ द्वारा विक्रोली पार्कसाईट स्थित आनंदगढ़ में विगत वर्ष की भांति इस वर्ष भी 28 वें वर्ष स्थापित श्री गणपति बप्पा का प्रति दिन वैदिक मंत्रोच्चार और दीपदान तथा मंगलाचार्य के साथ हर्षोल्लास से गणेशोत्सव मनाया जा रहा है।मंडल संस्थापक रामगोविन्द यादव ने बताया कि नवयुवक का राजा का सुबह शाम आरती और दर्शन आशीर्वाद में भक्तों की भीड़ लगी रहती है।

नालासोपारा के निपेश भाटिया ने संभाल रखा है पुरातन धरोहरों का खजाना

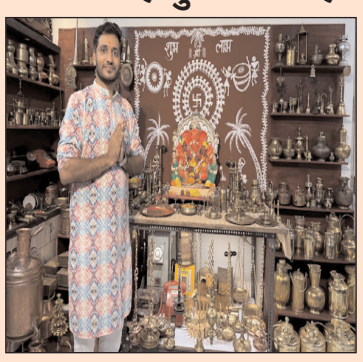

प्रेम चंद मिश्रा/नालासोपारा (उत्तरशक्ति)। नालासोपारा (पूर्व) स्थित 3/ 303 रश्मि रिजेंसी 2 नियर बालाजी बैकंट हाल लिंक रोड नालासोपारा पूर्व निवासी निपेश भाटिया ने पुरातन को संयोज कर रखा है। जहां पर आधुनिकता की रफ्तार में लोग पुरानी चीजों को भुला देते हैं, वहीं वसई (पूर्व) के लिंक रोड निवासी निपेश भाटिया बीते 30 वर्षों से प्राचीन धरोहरों को संजोने का अद्भुत काम कर रहे हैं।

उनका यह शौक वर्ष 1995 से शुरू हुआ और आज उनके पास एक ऐसा अनोखा संग्रह है, जो इतिहास और संस्कृति की झलक दिखाता है। भाटिया के खजाने में पुराने सिक्के, करंसी नोट्स, विंटेज तस्वीरें, अखबारों की कतरनें, प्राचीन रेडियो, घड़ियाँ, पीतल कांसा तांबा लोहा और लकड़ी से बनी वस्तुएँ शामिल हैं। इतना ही नहीं, उनके पास पुराने पूजा के बर्तन, रसोई के उपकरण, अनाज नापने के माप, भगवान की मूर्तियाँ और तेल के दीये भी सुरक्षित हैं। उनकी कलेक्शन की सबसे खास पहचान है झ विभिन्न देशों के विंटेज ऑयल लैम्प्स का दुर्लभ संग्रह। यह न केवल कला और परंपरा को उजागर करता है, बल्कि बीते दौर की तकनीक और संस्कृति की भी झलक पेश करता है।निपेश भाटिया का मानना है कि एंटीक वस्तुएँ केवल सामान नहीं होतीं, बल्कि यह हमारे अतीत, इतिहास और संस्कृति की जीवंत धरोहर हैं। इन्हें सहेजना आने वाली पीढ़ियों के लिए एक जिम्मेदारी है। भाटिया के इस जुनून और लगन की चर्चा स्थानीय स्तर पर खूब हो रही है। लोग उनके संग्रह को देखकर प्रभावित होते हैं और इसे वसई की सांस्कृतिक धरोहर करार देते हैं। यह जानकारी समाजसेवी अमित ओमप्रकाश दुबे ने प्रेस विज्ञाप्ति के माध्यम से दी है।

सेवानिवृत्त शिक्षक के आर सिंह के द्वारा अतिथियों का हुआ स्वागत

मुंबई (उत्तरशक्ति)। अखंड क्षत्रिय समाज संस्था के वरिष्ठ सदस्य समाज सेवक, सेवा-निवृत्त शिक्षक के. आर. सिंह के द्वारा आये हुए अतिथियों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर रवीन्द्र बहादुर सिंह ब्लॉक प्रमुख (लमुहा, सुल्तानपुर), विपिन सिंह ग्राम प्रधान भनौर बरसठी, आनंद सिंह, अधिवक्ता, हाईकोर्ट इलाहाबाद, जौनपुर, और साथ में अमित सिंह, सन्नी सिंह का सम्मान पूर्व शिक्षक के आर सिंह ने किया।

समृद्ध पंचायत राज अभियान से ग्राम विकास को मिलेगी नई दिशा : पालकमंत्री गणेश नाईक

पालघर(उत्तरशक्ति)। लोकाभिमुख सक्षम पंचायतराज व्यवस्था का निर्माण, पंचायती राज संस्थाओं का आर्थिक सशक्तिकरण, मनरेगा और ग्रामविकास योजनाओं का प्रभावी क्रियान्वयन तथा नवीन उपक्रमों को गति देने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री समृद्ध पंचायतराज अभियान के तहत जिला स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महाराष्ट्र सरकार के वनमंत्री एवं पालघर जिले के पालकमंत्री गणेश नाईक ने कहा कि समृद्ध पंचायत राज अभियान के माध्यम से ग्रामविकास की गती और तेज होगी।

कार्यशाला का आयोजन जिला परिषद, पालघर में ग्रामविकास एवं पंचायतराज विभाग की ओर से किया गया। कार्यक्रम में सांसद डॉ. हेमंत सवरा, विधायक राजेंद्र गावित, जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी मनोज रानडे, एकात्मिक आदिवासी विकास प्रकल्प अधिकारी विशाल खत्री, अपूर्वा बासुर, अति. मुख्य कार्यकारी अधिकारी रविंद्र शिंदे, प्रकल्प संचालक रूपाली सातपुते, सरपंच-उपसरपंच, गटविकास अधिकारी और ग्रामविकास अधिकारी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

इस मौके पर पालकमंत्री नाईक ने बोलते हुए कहा कि ग्रामपंचायतें स्वच्छ, सुंदर और समृद्ध गांव के संकल्प के साथ योजनाबद्ध कार्य करें। बदलते मौसम, अतिवृष्टी और प्राकृतिक असंतुलन के उपाय स्वरूप बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण आवश्यक है। उन्होंने बताया कि राज्य में 250 करोड़ वृक्ष लगाने का लक्ष्य रखा गया है तथा टिश्यू कल्चर तकनीक से उच्च गुणवत्ता वाले पौधे तैयार किए जा रहे हैं। उन्होंने ग्रामपंचायतों से प्लास्टिक मुक्त गांव, स्वच्छता अभियान, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधा, किसानों व मजदूरों के कल्याण और रोजगार सृजन जैसे क्षेत्रों में ठोस पहल करने का आह्वान किया। साथ ही यह भी स्पष्ट किया कि जात-पात, धर्म और भाषा की दीवारें तोड़कर मानवता को प्राथमिकता देनी होगी। ह्यग्राम स्तर पर प्रत्येक नागरिक के जीवन में संतोष और विकास लाना ही पंचायत राज व्यवस्था का वास्तविक उद्देश्य है,ह्व ऐसा मत भी उन्होंने व्यक्त किया। नाईक ने कहा कि पालघर जिला शिक्षा, स्वास्थ्य और ग्रामविकास के क्षेत्र में राज्य में अग्रणी बने, इसके लिए सामूहिक प्रयास करना आवश्यक है। कार्यशाला के पश्चात पालकमंत्री नाईक की अध्यक्षता में फेडरेशन ऑफ पालघर डिस्ट्रिक्ट इंडस्ट्रियल असोसिएशन और तारापूर इंडस्ट्रियल मैन्युफैक्चरर्स असोसिएशन की समस्याओं को लेकर जिलाधिकारी कार्यालय में समीक्षा बैठक भी आयोजित की गई। इस बैठक में सांसद डॉ. हेमंत सवरा, विधायक राजेंद्र गावित, जिलाधिकारी डॉ. इंदुराणी जाखड, जिला पुलिस अधीक्षक यतीश देशमुख, जिला परिषद के पूर्व अध्यक्ष प्रकाश निकम, अपर जिलाधिकारी भाऊसाहेब फटांगरे, निवासी उपजिलाधिकारी सुभाष भागडे सहित वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

श्री सत्यनारायण भगवान की पूजा संपन्न

भिवंडी (उत्तरशक्ति)। भिवंडी के काल्हेर स्थित ग्लैक्सी मल्टी स्पेशियलिटी हॉस्पिटल के दो वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में गत 3 सितंबर 2025 दिन बुधवार को श्री सत्यनारायण भगवान की पूजा का आयोजन किया गया। जिसमें लोकाधिकार सेवा समिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं ब्लॉक प्रमुख प्र. प्रभाकर चंद्रशेखर शुक्ल रिंकू ने श्री सत्यनारायण भगवान की पूजा में शामिल होकर दर्शन,आरती, आशीर्वाद और प्रसाद लिए।तत्पश्चात हॉस्पिटल के अधिष्ठाता डॉ अश्विनी पांडेय ने प्रभाकर शुक्ल को शाल पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किए। इसी कड़ी में आए हुए सभी अतिथियों का डॉ अश्विनि पांडेय ने स्वागत सत्कार किया। इस अवसर पर उद्योगपति पंकज मिश्रा,डॉ अमर मिश्रा, आशीष तिवारी,राकेश मिश्रा,अतुल जी,विजय मिश्रा, भास्कर दुबे, उत्कर्ष सिंह,उत्कर्ष दुबे,ऋषभ मिश्रा, विशेष कार्यकारी अधिकारी महाराष्ट्र शासन आदेश मिश्र सहित क्षेत्र के कई अन्य सम्मानित गणमान्य लोग मौजूद रहे।

खतरनाक रासायनिक कारखानों की प्रदूषण व सुरक्षा उपायों पर जिलाधिकारी की अध्यक्षता में बैठक आयोजित

पालघर(उत्तरशक्ति/अजीत सिंह)। पालघर जिले में संचालित खतरनाक व अति-खतरनाक रासायनिक उत्पादन करने वाले कारखानों में प्रदूषण नियंत्रण, कामगारों की सुरक्षा और आपातकालीन उपायों को लेकर शुक्रवार 5 सितंबर 2025 को जिलाधिकारी कार्यालय में विशेष बैठक का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता जिलाधिकारी डॉ. इंदुरानी जाखड़ ने की।

इस अवसर पर विधायक राजेंद्र गावित की विशेष उपस्थिति रही। वहीं, निवासी उपजिलाधिकारी सुभाष भागडे, जिले के तहसीलदार (दूरदृश्य प्रणाली द्वारा), उद्योग क्षेत्र से जुड़े व्यावसायिक, विभिन्न कारखानों के प्रबंधक, प्रतिनिधि, औद्योगिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य विभाग के वरिष्ठ अधिकारी, कामगार उपआयुक्त तथा अन्य प्रशासकीय अधिकारी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। बैठक में जिलाधिकारी डॉ. इंदुरानी जाखड़ ने निर्देश दिए कि रासायनिक कारखानों में आपातकालीन परिस्थितियों से निपटने के लिए कामगारों को नियमित प्रशिक्षण, कार्यशालाएं एवं रंगीन तालिम (मॉक ड्रिल) आयोजित की जाए। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि प्रत्येक कामगार को आपातकालीन स्थिति में सक्षम प्रतिक्रिया देने योग्य बनाया जाना चाहिए। औद्योगिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों ने वायुगलती, आग, विस्फोट और अन्य प्राणघातक दुर्घटनाओं से बचाव के लिए आवश्यक सुरक्षा उपायों और पद्धतियों पर विस्तृत मार्गदर्शन दिया। उन्होंने नियमित सुरक्षा लेखापरीक्षण, प्रशिक्षण और मॉक ड्रिल को अनिवार्य रूप से लागू करने की आवश्यकता पर जोर दिया। कामगार उपआयुक्त, पालघर ने कामगारों के कौशल विकास (कोर कंपटेंसी डेवलपमेंट) की महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षित व सक्षम कामगार दुर्घटनाओं की संभावना को कम करेंगे और उद्योग जगत सुरक्षा की दृष्टि से और मजबूत होगा।

बैठक में जिलाधिकारी डॉ. इंदु रानी जाखड़ ने जिले के सभी रासायनिक कारखानों से प्रदूषण नियंत्रण, सुरक्षा उपाय, नियमित प्रशिक्षण और मॉक ड्रिल पर विशेष ध्यान देने का आवाहन किया।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष रवींद्र चव्हाण ने 'एकत्मता चा राजा' के चरणों में अर्पित की पांच किलो चांदी की गदा

आचार्य सूरजपाल यादव

भिवंडी (उत्तरशक्ति)। भारतीय जनता पार्टी के महाराष्ट्र प्रदेश अध्यक्ष रवींद्र चव्हाण गुरुवार को भिवंडी शहर में 'एकत्मता चा राजा' के रूप में मनाए जाने वाले धामनकर नाका मित्र मंडल के दर्शन कर बप्पा के चरणों में पांच किलो चांदी की गदा अर्पित किया। इस अवसर पर मंडल अध्यक्ष संतोष शेट्टी, विधायक महेश चौघुले, भाजपा जिलाध्यक्ष रवि सावंत, आरपीआई अध्यक्ष महेंद्र गायकवाड़, भाजपा पूर्व अध्यक्ष एडवोकेट हर्षल पाटिल आदि के साथ भारी संख्या में भाजपा पदाधिकारी उपस्थित थे। बतादें कि पिछले वर्ष बप्पा के दर्शन कर रवींद्र चव्हाण ने महाराष्ट्र में महायुति सरकार के सत्ता में आने के लिए धामनकर नाका मित्र मंडल के एकात्मता चा राजा के सामने प्रार्थना की थी। उस स्वप्न के साकार होने पर रवींद्र चव्हाण ने गणेश जी के दर्शन कर बप्पा के चरणों में पाँच किलो चाँदी की गदा अर्पित की और प्रार्थना किया कि मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के कार्यकाल में राज्य की जनता के कल्याण हेतु सभी योजनाएँ क्रियान्वित हों। चव्हाण आगमन पर मंडल अध्यक्ष संतोष शेट्टी ने रवींद्र चव्हाण का भव्य स्वागत किया वहीं रवींद्र चव्हाण के हाथों से दो जरूरतमंद महिलाओं को आत्मनिर्भरता हेतु सिलाई मशीनें भेंट की गईं।

फिल्मी हस्तियों की उपस्थिति में म्यूजिक वीडिओ एल्बम दिल का खुदा रिलीज

मुंबई (उत्तरशक्ति)। अँधेरी पश्चिम स्थित इम्पा कार्यालय में मासूम फिल्म कम्पनी का बहुचर्चित म्यूजिक वीडियो एल्बम दिल का खुदा रिलीज किया गया। जिसके हीरो हैं रॉक स्टार संगीत मासूम। इसके साथ यू ट्यूब चैनल ₹दि ग्रेट बॉलीवुड₹ लॉन्च किया गया। इस अवसर पर पद्मश्री, पद्म भूषण उदित नारायण, सुप्रसिद्ध बॉलीवुड सिंगर अगम कुमार निगम, सैकड़ों सुपर हिट फिल्मों का संगीत देने वाले दिलीप सेन, सलमान खान के लिए सुपर हिट गीत गाने वाले गुणी गायक शबाब साबरी, हास्य कलाकार सुनील पाल, फेमस संगीतकार रफीक राजा, फेमस संगीतकार वैष्णव देवा और खुदा गवाह जैसी फिल्म के विलेन से लेकर गदर -2 तक एक से एक बढ़कर फिल्म में अपने अभिनय का लोहा मनवाने वाले मिलनसार अली खान जैसी हस्तियाँ उपस्थित रहीं।

इनके अलावा डायरेक्टर आजाद हुसैन, उभरती हुई सिंगर लवनीता साहा, एकता श्रीमाली, अभिनेत्री शहनाज, नाजरीन, निमार्ता - निर्देशक कैलाश कुमार मासूम, राजनीतिज्ञ किशोर कुमार मासूम,समाजसेवक परशुराम यादव, निमार्ता दशरथ राठौड़, निमार्ता रईस खान, निमार्ता उमेद सिंह राजपुरोहित, अभिनेत्री आशा तिवारी, अभिनेत्री गायत्री राठौड़, एस पी सेन, पत्रकार जटाशंकर सिँह आदि की उपस्थिति में यह शानदार कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसका संचालन शिवपूजन पाण्डेय ने किया। मासूम फिल्म कम्पनी का ये सॉन्ग दिल का खुदा लोगों को खूब पसंद आप रहा है। इस गीत को अपनी मखमली आवाज से गाया है पद्मश्री, पद्म भूषण उदित नारायण ने, संगीत वैष्णव देवा का है और अपने जादुई शब्दों से लिखा है मुकेश कुमार मासूम ने। शिवपूजन पाण्डेय ने कहा कि मुकेश कुमार मासूम के गीत तपते रेगिस्तान में ठंडी छाँव की तरह होते हैं । आज जब बॉलीवुड में अच्छी कहानियों और सशक्त गीतों का अकाल दिखाई दे रहा है, ऐसे दौर में गीतकार मुकेश कुमार मासूम की लेखनी श्रोताओं को तपते रेगिस्तान में उम्मीद की ठंडी छाँव देती है। जब अधिकतर म्यूजिक कंपनियाँ पुराने सुपरहिट गानों को रीमिक्स कर बाजार में उतारने में लगी हैं, ऐसे समय में मुकेश मासूम के गीत ताजगी, संवेदना और साहित्यिक सौंदर्य से लबरेज होते हैं। मुकेश कुमार मासूम ऐसे विरले गीतकार हैं जिनके गीत न केवल रोजाना रिकॉर्ड होते हैं, बल्कि टॉप लेबल के सिंगर्स भी उनके साथ काम करने के लिए तत्पर रहते हैं। उनके गीत सीधे दिल को छूते हैं और आत्मा तक पहुँचते हैं। मुकेश मासूम शब्दों से जादू रचते हैं। मुकेश मासूम की लेखनी अंधेरे में सूर्य की रौशनी की तरह है। मुकेश मासूम की लेखनी आज के समय में भारतीय गीत-संस्कृति की सच्ची धरोहर है।

इस म्यूजिक वीडिओ एल्बम के हीरो संगीत मासूम के अभिनय की सभी अतिथियों ने खूब प्रशंसा की। इस गीत को रॉकस्टार संगीत मासूम पर फिल्माया गया है।अभिनय में प्रशिक्षित संगीत मासूम ने रोशन तनेजा एक्टिंग एकेडमी से डिप्लोमा और स्वर्गीय सरोज खान से नृत्य की शिक्षा ली है। मुंबई के ठाकुर कॉलेज में अध्ययनरत संगीत, अपनी अभिनय प्रतिभा के कारण बॉलीवुड में तेजी से उभरते सितारे बन रहे हैं। गौरतलब है कि संगीत मासूम का हाल ही में रिलीज हुआ गीत ब्रेकअप पार्टी (शेमारू) को भारी लोकप्रियता मिली है। साथ ही, उनका एक और गीत इखर टवरक्ठ से भी रिलीज हो चुका है, जिसका नाम है साजन के शहर में जाके । आने वाले प्रोजेक्ट्स में वे उदित नारायण, अगम कुमार निगम, समीर खान और शबाब साबरी, कृष्णा जी,जैसे दिग्गज गायकों के गीतों में भी अपनी एक्टिंग का जलवा बिखेरने वाले हैं।

इस अवसर पर उदित नारायण ने अपने आपको मासूम फैमिली का ही मेंबर बताया और सॉन्ग को सर्वश्रेष्ठ बताया। सुप्रसिद्ध अभिनेता अली खान गीत सुनकर भावुक हो गये और उनकी आँखें भीग गयीं।

बिरला नियारा के सभागार में मनाया गया शिक्षक दिवस

मुंबई(उत्तरशक्ति)। महानगर के वरली,मुंबई स्थित बिरला नियारा प्रोजेक्ट के सभागार में शुक्रवार दिनांक 5 सितंबर 2025 को शिक्षक दिवस मनाया गया। उक्त कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि बिरला स्टेट्स के मुख्य सेफ्टी राहुल मेश्राम एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में कवि एवं पत्रकार विनय शर्मा दीप उपस्थित थे।जिसका आयोजन बिरला स्टेट्स के एडमिन हरीश खान ने किया तथा उनके सहयोगी टर्नर रहमान, रोहित,राजेश ठाकुर,लाइटन के विनिश एच एस ई मैनेजर,कमल शर्मा,डॉ नीरज कुमार यादव,डॉ राजेश देवेन्द्र सहित लाइटन एवं बिरला के सभी सुरक्षाकर्मी उपस्थित थे। वरिष्ठ सेफ्टी राहुल मेश्राम ने शिक्षक दिवस के अवसर पर प्रथम महिला शिक्षिका सावित्रीबाई फुले के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सतारा महाराष्ट्र की महिला सावित्रीबाई फुले ने 1848-1897 के बीच सत्य शोधक समाज की स्थापना करते हुए समाज को जागरूक करते हुए शिक्षा देने का सराहनीय कार्य किया। सावित्रीबाई एक शिक्षक के साथ साथ समाज सुधारक,कवि एवं सक्रिय कार्यकर्ता थी। वहीं विशिष्ट अतिथि कवि विनय शर्मा दीप ने कहा डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्म 5 सितंबर 1888 को हुआ था। जिन्होंने शिक्षण कार्य करते हुए समाज सुधार हेतु शिक्षा पर बल दिया इसलिए उनके जन्मदिन को शिक्षक दिवस के रुप में मनाया जाता है। डॉ राधाकृष्णन शिक्षाविद, दार्शनिक एवं 1962-1967 देश के दूसरे राष्ट्रपति तथा प्रथम उप-राष्ट्रपति 1952-1962 रहे।अंत में आयोजक हरीश खान ने दोनों शिक्षक डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन एवं सावित्रीबाई फुले के महान योगदान हेतु याद करते हुए उन्हें नमन किया तथा उपस्थित सभी अतिथियों का सम्मान करते हुए आभार व्यक्त किया।

माटुंगा में गणेश उत्सव की धूम, 25 वर्षों से जारी है भंडारे की सेवा

मुंबई (उत्तरशक्ति)। मुंबई में गणेश चतुर्थी की रौनक पूरे शहर को भक्तिमय माहौल में रंग देती है। विशेष रूप से माटुंगा क्षेत्र में सार्वजनिक गणेश उत्सव सेवा समिति' द्वारा हर वर्ष गणेश उत्सव बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। यहां न केवल भव्य पंडालों में गणपति बप्पा की भव्य मूर्तियों की स्थापना की जाती है, बल्कि श्रद्धालुओं के लिए दिन-रात भंडारे का आयोजन भी किया जाता है।

भक्तगण बड़ी संख्या में दर्शन के लिए पहुंचते हैं और कई-कई घंटे कतार में खड़े रहकर बप्पा के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त करते हैं। इसी उत्साह और श्रद्धा का नजारा इस वर्ष भी माटुंगा भंडार करोड़ क्षेत्र में देखने को मिला।

उत्तर शक्ति सार्वजनिक गणेश उत्सव सेवा समिति के सदस्य पिछले 25 वर्षों से लगातार रात भर सेवा भाव से भंडारे का आयोजन करते आ रहे हैं। यह भंडारा श्रद्धालुओं को निःशुल्क प्रसाद प्रदान करता है, जिसमें समिति के सदस्यों की कड़ी मेहनत और समर्पण देखने लायक होता है। समिति का उद्देश्य केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है, बल्कि वह सामाजिक सेवा और एकजुटता का संदेश भी देती है। समिति के सदस्य दिन-रात लगकर यह सुनिश्चित करते हैं कि हर भक्त को प्रसाद मिले और वह संतुष्ट होकर लौटे। इस प्रकार का आयोजन न केवल धार्मिक भावना को मजबूत करता है, बल्कि समाज में सेवा और समर्पण की भावना को भी प्रोत्साहित करता है।

उत्तरशक्ति
* संपादकः ओमप्रकाश प्रजापति
* उप संपादकः प्रेम चंद मिश्रा
*प्रबंध संपादकः डा. शेषधर बिन्द
उपरोक्त सभी पद अवैतनिक है।
पत्राचार कार्यालय:
उत्तरशक्ति (हिंदी दैनिक)
मुंबई-पूणे मोटर मालक श्रमजीवन प्रिमायसेस को.सो., बी-5, ए-337 ट्रक टर्मिनल डब्लू.टी.टी. रोड, आर.टी.ओ. जवल ऑटाफ हिल वडाला, मुंबई-37
मो.- 9554493941
email ID- uttarshaktinews@gmail.com

स्वामीः शरद फागूराम प्रजापति, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक ओमप्रकाश रविंद्रनाथ प्रजापति द्वारा सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, यूनिट क्रमांक 4, तल मजला, एन.के. इंडस्ट्रियल स्टेट, आरे रोड, प्रवासी इंडस्ट्रियल एस्टेट, जवल, गेट क्रमांक 2, गोरेगांव (पूर्व), मुंबई-400063, महाराष्ट्र से मुदित एवं के-4, रूम नं. 8, ग्राउंड फ्लोर न्यू समता सहकारी को.ऑ. हां. सोसाइटी, एमएमआरडीए कॉलोनी कंजूरमार्ग (वेस्ट), जिला मुंबई- 400078, महाराष्ट्र से प्रकाशित। RNI NO. MAHHIN/2018/76092 * संपादक- ओमप्रकाश रविंद्रनाथ प्रजापति, समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के लिए उत्तरदाई तथा इससे उत्पन्न समस्त विवाद मुंबई न्यायालय के अधीन होंगे।
पत्राचार कार्यालयः मुंबई-पूणे मोटर मालक श्रमजीवन प्रिमायसेस को.सो., बी-5 ए-337 ट्रैक टर्मिनल, डब्लू.टी.टी. रोड, आर.टी.ओ. जवल, ऑटाफ हिल, वडाला मुंबई -37, मो.- 9554493941 email ID- uttarshaktinews@gmail.com

एआईएमआईएम पार्टी द्वारा जिला अस्पताल में मरीजों के बीच फल का वितरण

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। सरवरे कायनात हुजूर-ए-पाक मोहम्मद स.अ.व की यौम-ए-पैदाइश के मौके एआईएमआईएम पार्टी द्वारा जिला अस्पताल के पुरुष व महिला वार्ड में मरीजों के बीच फल का वितरण किया गया।

इस अवसर पर जिलाध्यक्ष इमरान बन्टी ने कहा कि इस नेक पहल का उद्देश्य मरीजों को स्वास्थ्य लाभ के लिए प्रोत्साहित करना और समाज में भाईचारे व मानवता का संदेश फैलाना था। उन्होंने कहा कि पैगंबर मोहम्मद स.अ.व की शिक्षाएं हमें प्रेम, करुणा और सेवा का मार्ग दिखाती हैं। इस अवसर पर हमने मरीजों के बीच फल बांटकर उनकी सेवा करने का छोटा सा प्रयास किया है। नगर अध्यक्ष जावेद अजीम ने कहा कि पैगंबर साहब की जिंदगी हमें मानवता, दया और एकता का पाठ पढ़ाती है। इस कार्यक्रम के माध्यम से हमने मरीजों के प्रति अपनी संवेदना और सहयोग व्यक्त करने का प्रयास किया है। उन्होंने आगे कहा,हमारा संगठन समाज के कमजोर वर्गों की सेवा के लिए हमेशा तत्पर है और ऐसे कार्यों को निरंतर जारी रखेगा। पूर्वांचल संयुक्त सचिव जावेद सिद्दीकी ने कहा कि इस पवित्र दिन पर हमने अस्पताल में भर्ती मरीजों के बीच फल बांटकर उनकी सेवा करने और उनके चेहरों पर मुस्कान लाने का छोटा सा प्रयास किया है।उन्होंने आगे कहा कि एआईएमआईएम का लक्ष्य समाज के हर वर्ग तक पहुंचकर उनकी मदद करना और सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देना है। इस अवसर पर मुख्य रूप से जिला महासचिव शाहनेयाज अहमद, इरशाद अहमद, जिला संयुक्त सचिव अम्लेश राजभर, जिला कोषाध्यक्ष कलीम हाशमी, अब्दुल्लाह, आजाद खान,राजू खान, तारिक खान, सरफराज खान, ऐजाज मौजूद रहें।

पाकिस्तान बाढ़ त्रासदी में आंतकी हाफिज का संगठन सक्रिय, सरकार से नजदीकी पर उठे सवाल

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के पंजाब में पिछले दो सप्ताह में बाढ़ के कारण 37 लाख लोग बेघर हो गए हैं जबकि मुंबई आतंकवादी हमले के मास्टरमाइंड हाफिज सईद का राजनीतिक संगठन प्रांतीय सरकार के साथ बाढ़ प्रभावित जिलों में सक्रिय हो गया है। सईद के प्रतिबंधित संगठनों का नया चेहरा माने जाने वाले पाकिस्तान मरकजी मुस्लिम लीग (पीएमएमएल) की ओर से बृहस्पतिवार को एक बयान के साथ जारी की गई तस्वीर में फैसलाबाद के उपायुक्त कैप्टन (सेवानिवृत्त) नदीम नासिर पीएमएमएल सदस्यों के साथ बुधवार को जिले के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का दौरा करते हुए एक नाव पर सवार नजर आ रहे हैं।

पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन) के नेतृत्व वाली प्रांतीय सरकार की ओर से पीएमएमएल टीम के साथ बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में नासिर के दौरे के बारे में कोई आधिकारिक बयान नहीं आया। पीएमएमएल प्रतिबंधित जमात-उद-दावा (जेयूडी) की एक राजनीतिक शाखा है और लश्कर-ए-तैयबा (एलईटी) का मुखौटा है। लश्कर ने भारत के कई हिस्सों में आतंकवादी हमले किए हैं, जिनमें 2008 का भयावह 26/11 मुंबई हमला भी शामिल है। इस भयावह हमले में 166 लोग मारे गए थे। सईद संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित आतंकवादी है और उस पर अमेरिका ने एक करोड़ अमेरिकी डॉलर का इनाम रखा है। जुलाई 2019 में आतंकवाद के वित्तपोषण के एक मामले में गिरफ्तार होने के बाद से वह लाहौर की कोट लखपत जेल में बंद है। भारतीय सेना ने पहलगाम आतंकी हमले का बदला लेने के लिए ह्यऑपरेशन सिंदूर' के तहत मुरीदके स्थित लश्कर-ए-तैयबा के अड्डे को निशाना बनाया, जिसमें 26 लोग मारे गए थे। जमात-उद-दावा के तीन कार्यकर्ता मारे गए और उनके अंतिम संस्कार में पाकिस्तानी सेना, पुलिस और नागरिक नौकरशाही के वरिष्ठ अधिकारी शामिल हुए थे। सूत्रों ने यहां बताया कि ह्यऑपरेशन सिंदूर' के बाद से पीएमएमएल और भी सक्रिय हो गई है तथा उसे केंद्र और प्रांत दोनों में पीएमएल-एन सरकार का संरक्षण प्राप्त है। पंजाब के प्रांतीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (पीडीएमए) के महानिदेशक इरफान अली काठिया के अनुसार, पिछले दो हफ्तों में पंजाब में बाढ़ से लगभग 37 लाख लोग प्रभावित हुए हैं और 3,900 से अधिक गांव जलमग्न हो गए हैं। पीडीएमए ने बताया कि 23 अगस्त को शुरू हुई बाढ़ के बाद से अब तक मरने वालों की संख्या बढ़कर 46 हो गई है।

बिहार कम्प्यूटर शिक्षक वेलफेयर एसोसिएशन ने पटना में किया विशाल महाधरना

ICT परियोजना के तहत समायोजन की उठाई मांग

पटना। बिहार कम्प्यूटर शिक्षक वेलफेयर एसोसिएशन के बैनर तले आज पटना में एक विशाल महाधरना का आयोजन किया गया। इस आंदोलन में प्रदेश भर से कम्प्यूटर अनुदेशक बड़ी संख्या में शामिल हुए। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रदेश अध्यक्ष दिलीप कुमार ने की। महाधरना के दौरान प्रदेश अध्यक्ष ने राज्य सरकार से ICT@School Project के तहत बहाल कम्प्यूटर अनुदेशकों के स्थायी समायोजन की पुरजोर मांग की। उन्होंने कहा कि इन अनुदेशकों की बहाली विधिवत परीक्षा व साक्षात्कार के माध्यम से की गई थी और इनकी शैक्षणिक योग्यता भी तय मानकों के अनुरूप है। दिलीप कुमार ने कहा कि शिक्षा विभाग ने सरकारी विद्यालयों में बेसिक कम्प्यूटर स्किल्स के प्रैक्टिकल प्रशिक्षण हेतु इन अनुदेशकों की नियुक्ति एजेंसी के माध्यम से की थी, ताकि छात्रों को तकनीकी शिक्षा से जोड़ा जा सके। आज जब देश के अन्य राज्यों – जैसे असम, पश्चिम बंगाल, राजस्थान, पंजाब आदि – में कछ परियोजना के तहत कार्यरत कम्प्यूटर अनुदेशकों को दीर्घकालीन (60 वर्षों तक) सेवा का लाभ दिया जा रहा है, तब बिहार सरकार को भी इन शिक्षकों के कम से कम 20 वर्षों तक समायोजन पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। उन्होंने चेतावनी दी कि अगर सरकार ने इन वर्षों से लंबित मांगों पर उचित निर्णय नहीं लिया, तो एसोसिएशन के सदस्य आगामी दिनों में राजभवन जाकर ज्ञापन सौंपेंगे, और आंदोलन को और तेज किया जाएगा। महाधरना में विभिन्न जिलों से आए सैकड़ों अनुदेशकों की भागीदारी ने इस मुद्दे की गंभीरता को एक बार फिर सरकार के समक्ष रखा है।

व्यापार मंडल ने जीएसटी स्लैब में परिवर्तन पर मिठाई बांधकर प्रधानमंत्री का धन्यवाद दिया

*** GST के इस सुधार से व्यापारियों के साथ सामान्य जनता को भी फायदा मिलेगा-राधेरमण जायसवाल**

*** व्यापार मंडल इस परिवर्तन की काफी दिनों से मांग कर रहा था-महेंद्र सोनकर**

-रियाजुल हक

जौनपुर (उत्तरशक्ति)। नगर उद्योग व्यापार मंडल ने देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा जीएसटी में किए गए ऐतिहासिक सुधार पर शहर के मध्य स्थित चहारसु चौराहा पर केंद्र सरकार को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए खुशी व्यक्त किया और व्यापारियों को मिठाई खिलाते हुए ढोल नगाड़े के साथ आतिशबाजी किया। प्रदेश अध्यक्ष मुकुंद स्वरूप मिश्रा के आह्वान पर नगर अध्यक्ष राधेरमण जायसवाल ने जीएसटी के स्लैब में किए गए महत्वपूर्ण परिवर्तन पर खुशी व्यक्त करते हुए चहारसु चौराहा पर सैकड़ो की संख्या में उपस्थित होकर व्यापारियों को मिठाई खिलाते हुए खुशी व्यक्त किया। नगर अध्यक्ष ने बताया कि जीएसटी में इस ऐतिहासिक सुधार से व्यापारियों के साथ-साथ सामान्य जनता को भी काफी राहत मिलेगी तथा देश की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए सभी देशवासियों को अपने देश में बने हुए सामान का प्रयोग करना चाहिए। जिसके परिपेक्ष में व्यापार मंडल जन जागरूकता के लिए हस्ताक्षर अभियान चलाएगा। उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार मंडल के प्रदेश मंत्री महेंद्र सोनकर ने बताया कि व्यापार मंडल निरंतर यह मांग कर रहा था की जीएसटी की दरों में कमी की जाए जिसको भारत सरकार ने स्वीकार किया और जल्द ही नई दरें लागू करने का घोषणा किया गया है। जिससे व्यापारियों में खुशी है सरकार के इस कदम से महंगाई में कमी आएगी। संयोजक अमर जौहरी ने अपनी खुशी व्यक्त करते हुए भारत सरकार के साथ साथ प्रधानमंत्री और वित्त मंत्री का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में जिला संरक्षक अशोक बैंकर,छबूलाल सोनकर, नगर संरक्षक दिनेश सेठ,जिला महामंत्री रामकुमार साहू,नगर महामंत्री उत्तरी मनोज कुमार साहू,नगर महामंत्री दक्षिणी मुन्नालाल अग्रहरि, नगर कोषाध्यक्ष अनिल कुमार वर्मा युवा जिला अध्यक्ष संतोष अग्रहरि फामेर्सी, संजय केडिया, अनिल मद्धेशिया, संतोष साहू, संदीप वर्मा, रविंद्र अग्रहरि, यशवंत साहू सभासद, शिवम बरनवाल, शाहिद मंसूरी, मंगल सेठ, डी.के अग्रहरी, संतोष सेठ, प्रियम वर्मा, अनिल सेठराकेश जायसवाल, शत्रुघ्न सेठ, चंदन सेठ, सोनू गुप्ता के साथ सहित सैकड़ो व्यापारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के समापन में नगर कोषाध्यक्ष अनिल वर्मा ने सभी व्यापारियों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

कुएं में गिरी गाय बचाने में युवक की जान गयी

जौनपुर(उत्तरशक्ति)। केराकत क्षेत्र में एक दुखद घटना सामने आई है। सरौनी पूरब पट्टी के अमलधारी निषाद की उस समय कुंए में कुएं में गिरकर मौत हो गई जब वह उसमें गिरे बछड़े को बचाने उतर रहे थे। 35 वर्षीय अमलधारी अपने गांव के पश्चिम पट्टी में एक कुएं में गिरे बछड़े को बचाने गए थे। गाय को कुएं से निकालते समय रस्सी अचानक टूट गई। इस दौरान अमलधारी संतुलन खोकर कुएं में गिर गए। आसपास मौजूद ग्रामीणों ने तुरंत उन्हें कुएं से बाहर निकाला और अस्पताल ले गए जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस और लेखपाल मौके पर पहुंचे। और पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। वे मामले की जांच कर रहे हैं। अमलधारी के स्वर्गीय पिता का नाम राम जद निषाद था। इस घटना से पूरे गांव में शोक की लहर है। परिवार में कोहराम मचा हुआ है।

पुलिस मुठभेड़ में बदमाश और सिपाही को लगी गोली

जौनपुर(उत्तरशक्ति)। जिले के थाना जलालपुर पुलिस व स्वाट टीम के साथ हुई मुठभेड़ में एक अभियुक्त को लगने पर गिरफ्तार, कर लिया गया। अभियुक्तों के फायर से मुख्य आरक्षी अवधेश सिंह को गोली है। गिरफ्तार अभियुक्त के कब्जे से तमन्चा, सात कारतूस, आदि बरामद हुआ है।

अपर पुलिस अधीक्षक नगर आयुष श्रीवास्तव ने बताया है कि सयुक्त टीम असबरनपुर पुलिया के पास मौजूद थी तभी मुखबिर ने बताया कि 02 व्यक्ति असलहा व कारतूस के साथ मोटर साईकिल पर सवार होकर भाउपुर की तरफ से डिंगुरपुर क्रासिंग आ रहे है। पुलिस टीम द्वारा मौके पर पहुँचकर घेराबन्दी किया वाहन अपनी हेडलाईट जलाते हुए आता दिखाई दिया, पुलिस टीम सचेत होकर रोड पर आकर टार्च की रोशनी दिखाकर बदमाशो को रोकने का इशारा किया गया कि उक्त बदमाश पुलिस पर फायरिंग करने लगा, बदमाशों की फायरिंग में स्वाट टीम में तैनात हे0का0 अवधेश सिंह के बायें हाथ में गोली लगी तथा स्वाट टीम प्रभारी उ0नि0 अरविन्द सिंह के बुलेट प्रुफ जैकेट पर लगी, पुलिस द्वारा गोली चलाने पर बदमाश सूरज यादव उर्फ गोलू पुत्र रामअवतार यादव निवासी देवलासपुर थाना चन्दवक जनपद जौनपुर तो घायल दशा में गिरफ्तार किया गया तथा दूसरा बदमाश अखिलेश यादव उर्फ नेता पुत्र देवचन्द यादव निवासी कुसरना महादेवा थाना केराकत जनपद जौनपुर अंधेरे का लाभ उठाते हुए मो0सा0 सहित भाग गया। घायल बदमाश का इलाज बीएचयू ट्रामा सेन्टर वाराणसी में चल रहा है।

सुगी ने अपनी पहली गेटेड प्लॉटेड डेवलपमेंट परियोजना शुरू करते हुए एस डीलमेकर्स के साथ भागीदारी की

मुंबई।मुंबई के सबसे भरोसेमंद रियल एस्टेट डेवलपर्स में से एक सुगी ग्रुप ने कर्जत में गेटेड प्लॉटेड डेवलपमेंट शुरू करके सेकंड होम सेगमेंट में प्रवेश करने की घोषणा की है। भूमिपूजन समारोह एस डीलमेकर्स और पूर्णास्य के सहयोग से आयोजित किया गया था। सेकंड होम्स और वीकेंड रिट्रीट की मांग फिलहाल बढ़ रही है क्योंकि शहरी परिवार शहर की भागदौड़ से अक्सर राहत चाहते हैं। कर्जत मुंबई और पुणे की अल्पावधि में पसंदीदा विकल्प बन गया है, इसकी उपलब्धता, ग्रीन कवर और दीर्घकालिक विकास क्षमता को देखते हुए। ये आगामी परियोजना स्पष्ट शीर्षक के साथ फ्रीहोल्ड ठअ प्लॉट्स प्रदान करती है और उच्च गुणवत्ता वाली सड़कों, गेटेड सुरक्षा और समर्पित रिक्रिएशनल स्पेसेज जैसे तैयार, सुनिश्चित इंफ्रास्ट्रक्चर का एक नियोजित इकोसिस्टम प्रदान करती है, जिससे खरीदारों को अपने ड्रीम होम्स को डिजाइन और निर्माण करने का मौका मिलता है। सुगी ग्रुप के पार्टनर (सेल्स एंड फाइनेंस) प्रीतेश जैन ने कहा, ₹सुगी ग्रुप हमेशा टाइमली डिलीवरी, ट्रस्ट और ट्रांसपेरेंसी के लिए खड़ा रहा है। शहर में होम बायर्स का विश्वास हासिल करने के बाद, अब हम सेकंड होम मार्केट में उसी रिलायबिलिटी को ला रहे हैं। कर्जत में इस प्लान्ड डेवलपमेंट के साथ, हम कस्टमर्स को ऐसी जमीन देने पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं जिसे वे वास्तव में अपना कह सकते हैं। चार दशकों से अधिक की विरासत और महाराष्ट्र भर में 2,500+ एकड़ भूमि लेनदेन के साथ, एस डीलमेकर्स लिमिटेड के पास लीगली सिक्योर, रेडी-टू-डेवलप लैंड प्लॉट्स की पहचान करने में गहरी विशेषज्ञता है।

अल-फारूक पब्लिक स्कूल में शिक्षक दिवस का भव्य आयोजन

सुईथाकलां, जौनपुर(उत्तरशक्ति)। कादीपुर क्षेत्र के अल-फारूक पब्लिक स्कूल में शिक्षक दिवस बड़े ही हर्षोल्लास और गरिमामयी वातावरण में मनाया गया। यह आयोजन भारत के पूर्व राष्ट्रपति, महान शिक्षाविद् एवं दार्शनिक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयंती के अवसर पर किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत प्रार्थना और सरस्वती वंदना से हुई। इसके बाद विद्यालय में ग्रीटिंग कार्ड मेकिंग प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें कक्षा 3 से 10 तक के छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया। बच्चों ने अपने हाथों से बनाए कार्ड, पेपर गुलदस्ते और उपहार अपने प्रिय शिक्षकों को समर्पित किए। कार्यक्रम के अंतर्गत केक काटकर शिक्षक सम्मान समारोह का भी आयोजन हुआ, जहाँ बच्चों ने अपने शिक्षकों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। इसी अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य वसीम अहमद खान ने अपने प्रेरणादायी संबोधन में कहा शिक्षक राष्ट्र के वास्तविक निमार्ता होते हैं। वे कभी भी अपने छात्रों से कोई प्रतिदान नहीं चाहते, उनका एकमात्र ध्येय अपने विद्यार्थियों को जीवन में सफल बनाना है। उन्होंने आगे यह भी कहा कि ऐसे अवसर छात्रों में अनुशासन, आदरभाव और संस्कारों की नींव को और सशक्त बनाते हैं। कार्यक्रम के दौरान बच्चों ने नृत्य, गीत और भाषण प्रस्तुत कर वातावरण को भावनाओं और उत्साह से भर दिया। शिक्षकों ने भी अपने अनुभव साझा किए और विद्यार्थियों को कड़ी मेहनत और ईमानदारी से आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर विद्यालय के शिक्षक–जमीर अहमद, पवन कुमार, बसंत कुमार शुक्ल, साधना सिंह, संजु देवी, सुषमा, अमृता यादव, रिंकी मौर्या, जेबा खान, तबस्सुम, माला सिंह, रफि या खान, मरियम खातून, शफक खातून, सबीहा खान, सवित्री आदि विशेष रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम का सफल संचालन अध्यापक-समूह ने किया और अंत में प्राचार्य वसीम अहमद खान ने सभी शिक्षकों, छात्रों और अभिभावकों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि एक अच्छा शिक्षक केवल ज्ञान ही नहीं देता, बल्कि वह अपने आचरण और मूल्यों से आने वाली पीढ़ियों के लिए मार्गदर्शक बनता है। पूरे आयोजन के दौरान विद्यालय का वातावरण उत्साह, सम्मान और कृतज्ञता से ओत-प्रोत रहा।

मुख्यमंत्री फडणवीस का रीता सिंह ने भगवा गमछा व शिव प्रतिमा से किया सत्कार

मुंबई। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के आधिकारिक आवास वर्षा पर विराजमान विघ्नहर्ता भगवान श्री गणेश के दर्शन करने पहुँची भारतीय जनता पार्टी, मुंबई की प्रवक्ता रीता निलेश सिंह ने मुख्यमंत्री का सत्कार किया। मुख्यमंत्री फडणवीस ने इस अवसर पर रीता सिंह द्वारा भावपूर्ण सत्कार किए जाने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि वे संगठनात्मक कार्यों के साथ-साथ सामाजिक गतिविधियों में भी सक्रिय भूमिका निभाती हैं। उनकी इस टिप्पणी का समर्थन पूर्व मंत्री विद्या ठाकुर ने भी किया। गौरतलब है कि सीएम आवास वर्षा पर गणेशोत्सव के अवसर पर धार्मिक अनुष्ठान आयोजित किया गया था, जिसमें भाजपा के पदाधिकारियों और जनप्रतिनिधियों को आमंत्रित किया गया था। इस दौरान रीता सिंह ने मुख्यमंत्री को भगवा गमछा और भगवान शंकर जी की प्रतिमा भेंटकर सम्मानित किया। इस मौके पर भाजपा मुंबई अध्यक्ष अमित साटम, सिद्धिविनायक मंदिर ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष आचार्य पवन त्रिपाठी, जयप्रकाश ठाकुर, भाजपा भाजपा, उत्तर-पश्चिम जिलाध्यक्ष ज्ञानमूर्ति शर्मा सहित बड़ी संख्या में भाजपा के पदाधिकारी और जनप्रतिनिधि मौजूद थे।

जीएसटी सरलीकरण पर व्यापारियों ने जताया उत्साह

वाराणसी. जीएसटी दरों में कटौती और प्रक्रियाओं को सरल बनाने के फैसले ने व्यापारी जगत में नई उम्मीदें जगा दी हैं। खाद्य व्यापार मंडल ने प्रधानमंत्री एवं काशी सांसद नरेन्द्र मोदी के इस निर्णय को छोटे व मध्यम वर्गीय कारोबारियों के लिए दीपावली का उपहार बताया है।

मालवीय मार्केट (मैदागिन) में मंडल अध्यक्ष नवरतन राठी की अध्यक्षता में हुई बैठक में वक्ताओं ने कहा कि कर दरों को आसान और दो श्रेणियों में बांटना समय की मांग थी। यह सुधार न केवल व्यापार को गति देगा बल्कि आम उपभोक्ताओं को भी सीधा लाभ पहुंचाएगा। नवरतन राठी ने कहा कि 22 सितम्बर से लागू होने वाला यह कदम अर्थव्यवस्था को मजबूती देने वाला है। बैठक में सर्वसम्मति से प्रधानमंत्री मोदी को खाद्य व्यापार मंडल की ओर से आभार पत्र भेजने का निर्णय लिया गया। बैठक का संचालन गौरव राठी ने किया और धन्यवाद ज्ञापन चरणजीत सिंह ने दिया। इस अवसर पर विजय घंडवानी, राजा खत्री, शिवकुमार होतवानी, प्रदीप रामानी, अनिल सोनकर, दिलीप लालवानी, आकाश शर्मा, सागर वाड़वानी, बालाशंकर सिंह, विनोद मंगलानी, अनूप जायसवाल, राजेश केशरी समेत कई व्यापारी उपस्थित रहे।

शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर पचास से अधिक शिक्षक-शिक्षिकाओं को अंग वस्त्रम और माल्यार्पण कर किया सम्मानित

जौनपुर (उत्तरशक्ति)।शहर के वाजिदपुर तिराहा स्थित एसबीआई लाइफ इंश्योरेंस जौनपुर शाखा द्वारा शिक्षक दिवस की पूर्व संध्या पर गुरुवार की देर शाम गुरुजनों को पुष्प गुच्छ, अंगवस्त्रम और स्मृति चिह्न देकर अतिथियों ने सम्मानित किया। मुख्य अतिथि नगर शिक्षा अधिकारी नीरज श्रीवास्तव और एस बी आई लाइफ के डिप्टी रीजनल मैनेजर मनीष मिश्रा रहे । इस अवसर पर श्री श्रीवास्तव ने कहा शिक्षक हमारे जीवन के मार्गदर्शक होते हैं। जो हमें सही राह दिखाते हैं और हमारे भीतर ज्ञान का प्रकाश फैलाते हैं। शिक्षक केवल शिक्षा ही नहीं बल्कि अच्छे संस्कार भी देते हैं। मुख्य अतिथि श्री श्रीवास्तव का एसबीआई लाइफ के डिप्टी रीजनल मैनेजर मनीष मिश्रा और सीनियर डिवीजनल मैनेजर रवि श्रीवास्तव ने माल्यार्पण कर अंगवस्त्रम और स्मृति चिह्न देकर स्वागत किया । इसी क्रम में विशिष्ट अतिथि डिप्टी रीजनल मैनेजर मनीष मिश्रा ने कहा कि हमारी सफलता के पीछे शिक्षकों का परिश्रम छिपा होता है' शिक्षक आने वाली कठिनाइयों का सामना करना सिखाते हैं। वे हमारी प्रगति और भलाई की कामना करते हैं इसी कड़ी में शिक्षक गण अजय मौर्य,अश्वनी सिंह, श्रीमती विजय लक्ष्मी यादव और राज्य पुरस्कार से सम्मानित प्रीति श्रीवास्तव ने भी अपने विचार व्यक्त किए ।कार्यक्रम का संचालन सीनियर एजेंसी मैनेजर राजकुमार सिंह ने किया। इस अवसर पर सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक श्रीमती गीता सिंह, अश्वनी सिंह , आनंद सिंह बब्बू, आनंद सिंह भोले, अजय मौर्या, विजय लक्ष्मी यादव, रवि कांत, आलोक सिंह, आनंद प्रकाश सिंह, आनन्द कुमार सिंह, त्रिभुवन यादव, उमेश कुमार पाठक,सुधीर कुमार सिंह, आराधना चौहान, विनीता यादव, ममता श्रीवास्तव, प्रशात मिश्रा ₹शान्त जौनपुर₹ ,नमिता मिश्रा,राधेश्याम चौरसिया, सुधीर कुमार सिंह , अपर्णा श्रीवास्तव, रेखा यादव, श्वेता सिंह, संध्या यादव, राशी यादव,कंचन बाला, नीलम यादव, कल्पना यादव, शालिनी गुप्ता, विनीता यादव,सरिता देवी, आशा मौर्य, बविता सिंह, सरिता सिंह, अभिषेक सिंह, राजेश कुमार पाल, राधेश्याम चौरसिया, संदीप प्रताप सिंह, उमेश चतुवेर्दी, शिखा यादव, निवेदिता आनन्द, प्रियंका राय,गीता कुमारी,नीतू सिंह, डॉ. ज्योति मिश्रा, नमिता मिश्रा, प्रिया रघुवंशी , डॉ. यामिनी सिंह आदि को माल्यार्पण करके अंग वस्त्रम देकर सम्मानित किया गया। सीनियर डिविजनल मैनेजर रवि श्रीवास्तव ने समारोह में आए हुए सभी शिक्षकों और अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया। सम्मान समारोह को सफल बनाने में अमन श्रीवास्तव, रवि यादव, अर्जुन शर्मा (पत्रकार), आनंद कुमार सिंह (पत्रकार), कृष्णा यादव, सुश्री महिमा यादव, अमर यादव आदि का विशेष योगदान रहा।

घोड़बंदर रोड पर पुरणिक ग्रुप ने हस्तांतरित किए 10 हजार घर

ठाणे। पुरणिक ग्रुप ने घोड़बंदर रोड पर 10 हजार घरों का सफलतापूर्वक हस्तांतरण कर एक बड़ा मुकाम हासिल किया है। इस उपलब्धि के साथ कंपनी इस कॉरिडोर पर संगठित आवास क्षेत्र की सबसे बड़ी योगदानकर्ता बन गई है। इस अवसर पर ग्रुप ने अपने 10 हजारवें भाग्यशाली गृहस्वामी श्री भास्कर पिंपल शिंदे (टोक्यो बे परियोजना के निवासी) का सम्मान भी किया, जिन्हें इस माह अपना नया फ्लैट प्राप्त हुआ। कंपनी के अनुसार, वर्तमान में 5 हजार और आवास इकाइयों का निर्माण कार्य चल रहा है। ग्रुप का कहना है कि इससे ठाणे की सबसे तेजी से विकसित हो रही आवासीय बेल्ट में उसका विस्तार और मजबूत होगा। पुरणिक ग्रुप के चेयरमैन एवं मैनेजिंग डायरेक्टर शैलेश पुरणिक ने कहा–यह उपलब्धि सिर्फ आंकड़ों की नहीं, बल्कि विश्वास की है। घोड़बंदर रोड हमारी पहचान का केंद्र रहा है और यहां 10 हजार परिवारों ने हमें चुना है। यह गर्व का विषय होने के साथ ही हमें भविष्य के लिए और जिम्मेदार भी बनाता है। घोड़बंदर रोड की तेजी से बढ़ती पहचानः घोड़बंदर रोड आज ठाणे का प्रमुख विकास कॉरिडोर बन चुका है। यहां रोजाना एक लाख से अधिक वाहन गुजरते हैं और जल्द ही दो मेट्रो लाइनों की सुविधा भी जुड़ने जा रही है। कपूरबावड़ी इंटरचेंज के जरिए मेट्रो लाइन-4 (वडाला-ठाणे-कसारवडावली) और लाइन-5 (ठाणे-भिवंडी-कल्याण) को जोड़ने से मुंबई और नवी मुंबई तक की यात्रा का समय 30-40 प्रतिशत तक घटने की उम्मीद है। बाजार के आंकड़ों के मुताबिक, 2022 में यहां आवासीय दाम 13,500 प्रति वर्गफुट थे, जो 2025 के मध्य तक बढ़कर लगभग 19,800 प्रति वर्गफुट तक पहुंच गए हैं। यह हर साल औसतन 12 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है। वित्त वर्ष 2024-25 में ठाणे में 16 हजार से अधिक मकानों का पंजीयन हुआ, जिनमें से बड़ी हिस्सेदारी घोड़बंदर रोड की रही। 10 हजारवें परिवार की खुशीः प्रतीकात्मक तौर पर 10 हजारवें परिवार को चाबी सौंपी गई। एक बैंकिंग प्रोफेशनल ने कहा–हम अपनी बेटी के लिए ज्यादा जगह और बेहतर कनेक्टिविटी चाहते थे। घोड़बंदर रोड ने हमें दोनों दिए और पुरणिक ने भरोसा दिया। 10 हजारवां भाग्यशाली परिवार बनना हमारे लिए और भी खास है।

डॉ. वेदप्रकाश दुबे को मिला राष्ट्रीय उत्कृष्ट शिक्षक सम्मान

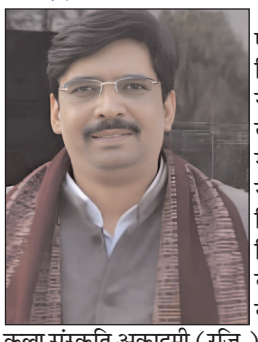

मुंबई। मुंबई के एसएनडीटी महिला विश्वविद्यालय से संबद्ध श्रीमती पी.एन. दोशी महिला महाविद्यालय के स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. वेदप्रकाश दुबे को बृजलोक साहित्य कला संस्कृति अकादमी (रजि.) एवं विश्वशांति मानव सेवा समिति (रजि.) आगरा- उत्तर प्रदेश के संयुक्त तत्वावधान द्वारा शिक्षक दिवस के स्वर्णिम अवसर पर अखिल भारतीय स्तर पर राष्ट्रीय उत्कृष्ट शिक्षक श्री सम्मान प्रदान किया है।

इबोला से 15 लोगों की मौत, कांगो में मची तबाही, 4 स्वास्थ्यकर्मियों ने भी तोड़ा

डकार। अफ्रीकी देश कांगो में इबोला के एक नए प्रकोप के कारण 15 लोगों की मौत होने का संदेह है। इस मध्य अफ्रीकी देश के स्वास्थ्य मंत्रालय ने बृहस्पतिवार को यह जानकारी दी। कांगो में यह 16वीं बार है जब इबोला का कहर टूटा है। स्वास्थ्य मंत्री सैमुअल-रोजर काम्बा ने कहा कि अनुमानित 53.6 प्रतिशत मृत्यु दर स्थिति की गंभीरता को दर्शाती है।

काम्बा ने कहा, ह्यह्यअभी तक की अनंतिम रिपोर्ट में 28 संदिग्ध मामले और 15 लोगों की मौत की जानकारी मिली है, जिनमें बौलापे में 14 और म्वेका में एक व्यक्ति की मौत हुई है। साथ ही चार स्वास्थ्यकर्मियों की भी मौत हुई है।'' संक्रमण की चपेट में आए सभी लोगों में बुखार, उल्टी, दस्त और भारी रक्तस्राव जैसे लक्षण दिखाई दिए।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने कहा कि उसने रोग निगरानी, उपचार और संक्रमण की रोकथाम एवं नियंत्रण को मजबूत करने के लिए कांगो की त्वरित प्रतिक्रिया टीम के साथ अपने विशेषज्ञों को कसाई प्रांत भेजा है। इबोला वायरस बेहद संक्रामक होता है और यह उल्टी, खून या वीर्य जैसे शारीरिक तरल पदार्थों के जरिए भी फैल सकता है।

मुंबई में गणेश चतुर्थी की धूम, गणपति बप्पा के हुए विशेष दर्शन

मुंबई(उत्तरशक्ति)। गणेश चतुर्थी के शुभ अवसर पर मुंबई के हर गली, नुक्कड़ और घर में गणपति बप्पा का धूमधाम से आगमन हुआ। श्गणपति बप्पा मोरया, मंगल मूर्ति मोरया के जयघोष से पूरा शहर भक्तिमय वातावरण में डूबा नजर आया। वॉर्ड क्र. 164 के काजुपाड़ा क्षेत्र में माजी नगरसेवक हरीश भांडीर्गे के निवास स्थान पर भी भव्य रूप से गणपति बप्पा की स्थापना की गई। इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने दर्शन कर पूजा-अर्चना की, जिनमें सुखबिंदर सिंह (लाला भाई), जय हिंद कुमार प्रजापति, राजेश शुक्ला, और श्रद्धा गोरगे (ज्योतिष व समाजसेविका) प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। दर्शन के उपरांत सभी भक्तों को मोदक व शेव-बूंदी का पारंपरिक प्रसाद वितरित किया गया। सभी आगंतुकों ने एक-दूसरे को गणेश चतुर्थी की हार्दिक शुभकामनाएं दीं और बप्पा से सुख-समृद्धि की कामना की। गणपति बप्पा के दर्शन से पूरे क्षेत्र में उत्सव का माहौल बना रहा, और श्रद्धालुओं की भीड़ से यह स्पष्ट हुआ कि गणेशोत्सव केवल एक पर्व नहीं, बल्कि आस्था और एकता का प्रतीक है।

बाबा सुंदरदास की भजन संध्या सम्पन्न, विशाल मेला व भंडारे का आयोजन

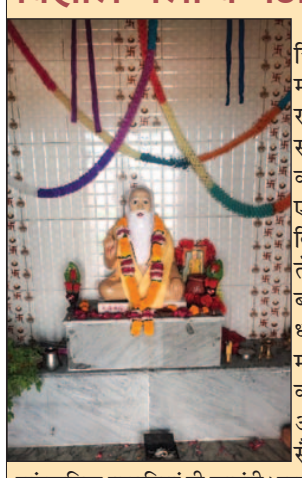

चिराना(उत्तरशक्ति)। पूर्वी ढ़हर चिराना स्थित बाबा सुंदरदास जी महाराज के मंदिर प्रांगण में शुक्रवार रात्रि को भक्तिभाव से ओतप्रोत भजन संध्या का आयोजन हुआ। इस धार्मिक कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रद्धालु एकत्र हुए और भजनों का रसास्वादन किया। बाबा सुंदरदास सेवा समिति के तोलाराम सैनी ने जानकारी देते हुए बताया कि आज शनिवार को सुंदरदास धाम, चिराना में बाबा सुंदरदास जी महाराज के पावन स्मृति में विशाल मेले का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर पणीहारवास से आई राकेश सैनी एंड पार्टी द्वारा दिनभर रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी जाएंगी। इसके साथ ही सुबह 11 बजे से विशाल भंडारे का भी आयोजन होगा, जिसमें सैकड़ों भक्तजन पंगत में बैठकर प्रसादी ग्रहण करेंगे। आयोजन स्थल को आकर्षक रूप से सजाया गया है और श्रद्धालुओं की सुविधा हेतु व्यापक प्रबंध किए गए हैं।

बोरीवली के सार्वजनिक गणेशोत्सव आयोजन में पहुंचे गोपाल शेट्टी

बोरीवली, मुंबई। बोरीवली-पश्चिम की वोल्गा ओम सुंदर विचार सोसायटी, रेयानी ग्राम,शिंपोली रोड के भव्य सार्वजनिक गणेशोत्सव के आयोजन में उत्तर मुंबई के पूर्व सांसद गोपाल शेट्टी ने उपस्थिति दर्ज कराते हुए भगवान श्री गणेश जी की मूर्ति का मनोभाव से दर्शन किया। इस अवसर पर उन्होंने वहां उपस्थित गणेश भक्तों को संबोधित भी किया।

जनसेवक गोपाल शेट्टी के साथ राजेश भट्ट, रविंद्र दास तथा दिलीप शाह सहित सोसायटी के निवासी नागरिक उपस्थित थे।

भाजपा नेता राजेश मिश्रा तथा धीरेन्द्र मिश्रा ने गणपति बप्पा के विभिन्न स्थानों पर दर्शन किए

मीरा भायंदर (उत्तरशक्ति)। मीरा भायंदर शहर में रहने वाले अनेक लोगों के घर पर स्थापित गणपति बप्पा के दर्शन करते हुए उन्होंने बप्पा से शहर की सुख शांति और समृद्धि की प्राथना की इस अवसर पर उनके साथ भारतीय जनता पार्टी बिहार प्रकोष्ठ के पूजा चौधरी, रश्मि मिश्रा, उपस्थित रहे।

बिहार के कोयला एवं खनन मंत्री सतीश चंद्र दुबे से राजेश मिश्रा की खास मुलाकात

मीरा भायंदर (उत्तर शक्ति)। मुंबई में भारतीय जनता पार्टी बिहार प्रकोष्ठ उपाध्यक्ष राजेश मिश्रा से बिहार के कोयला एवं खनन मंत्री नीतिश चंद्र दुबे से मुलाकात हुई। इस मुलाकात में खनन क्षेत्र में सुधार और खनिज संसाधनों के विकास पर चर्चा किया गया। दोनों नेताओं ने खनन क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़ाने के लिए भी विचार-विमर्श किया। यह मुलाकात बिहार के विकास और आगामी बिहार विधानसभा चुनाव पर चर्चा हुई। बिहार के लिए यह मुलाकात महत्वपूर्ण कदम साबित हो सकती है।

एसडीएम ने किया दर्जन भर पीडीएस दुकानों का निरीक्षण

सिवान (उत्तरशक्ति)। बिहार के सिवान जिला अंतर्गत महाराजगंज नगर पंचायत क्षेत्र के दर्जन भर जन वितरण प्रणाली दुकानों का औचक निरीक्षण किया. इस क्रम में जहां भी गड़बड़ियां मिली वहां कार्रवाई करने का आदेश दिया. महाराजगंज शहर के वार्ड 01,02, 03,04 के अतिरिक्त अन्य पीडीएस दुकानों पर पहुंच कर जांच की। दलबल के साथ पहुंचे एसडीएम को देखकर आम लोगों की भीड़ भी लग जा रही थी। एसडीएम जहां भी गई वहां गहन चांच किया। अनियमितता पाये जाने पर डांट फटकार भी लगाई। बताया जा रहा है कि योजनाओं में लूट-खसोट और अनियमितता बरते जाने की शिकायत लगातार राज्य के अधिकारियों को मिल रही थी, इसलिए नौ सितंबर तक सभी पीडीएस दुकानों की जांच का आदेश दिया गया है। जनवितरण प्रणाली दुकानदारों द्वारा राशन बांटने में गड़बड़ी करने के ज्यादा शिकायतें पहुंच रही थी। एसडीएम ने स्वयं सभी डीलरों के यहां जाकर राशन का स्टॉक, पॉश मशीन की जांच व वितरण पंजियों का मिलान किया।

पीवीसीएस के माध्यम से किसानों की आय में होगी वृद्धि भेजफेड आय को आगे बढ़ाने में करेगा मदद

सिवान (उत्तरशक्ति)। बिहार के सिवान जिला अंतर्गत महाराजगंज सीवान भेजफेड संरचना किसान विभिन्न सब्जियों के उत्पादन में कम लागत में अधिक लाभ लेने का बेहतर प्लेटफॉर्म है। किसानों को जागरूक करने के लिए सभी स्तर पर संबंधिक अधिकारी लगे हैं। उक्त बातें बिहार राज्य भेज फेड के प्रबंधक राकेश शर्मा ने को - ऑपरेटिव के सभागार में जिला के पीवीसीएस अध्यक्षों व पीवीसीएस के सहायक प्रबंधकों के साथ बैठक में कही। उन्होंने कहा कि समिति के व्यवसाय में यह अपव्यय को कम करके किसानों की आय को आगे बढ़ाने में मदद करेगा। आगंतुक अधिकारी ने बताया इस प्रकार यह खेती की सर्वोत्तम प्रथाओं को भी बढ़ावा देगा। कृषि उत्पादन में ज्ञान और कौशल के स्तर को बढ़ाएगा और फसल प्रसंस्करण के बाद उत्पादों को मूल्य देगा।

यह परियोजना राज्य के लिए रोजगार के अवसर पैदा करेगी इसके अलावा सब्जी की हैंडलिंग और प्रसंस्करण गतिविधियों के लिए मजदूरों की दैनिक आवश्यकता होगी। बिहार राज्य के लिए यह एकीकृत सब्जी आपूर्ति श्रृंखला जिलों के सब्जी उत्पादकों को एक बेहतर बाजार स्थान खोजने में मदद करेगी। जहां वे अपनी कृषि उपज बेच सकते हैं और वे अपने उत्पादन की वास्तविक कीमत प्राप्त कर सकते हैं। उन्नत आपूर्ति श्रृंखला अक्षमताओं को कम करेगी और उचित हैंडलिंग और फसल कटाई अपव्यय को कम करेगी, जो आपूर्ति श्रृंखला की ओवरहेड लागत को कम करेगी और किसानों की आय में वृद्धि करेगी। इस योजना में

सफलता के लिए अधीनस्थ सभी लोगों को ईमानदारी पूर्वक किसानों तक जानकारी पहुंचने का निर्देश दिया। बैठक में वीरेंद्र कुमार बारिया सहकारिता प्रसार पदाधिकारी मोतिहारी, पीएमयू सदस्य ओमप्रकाश कुमार के अलावा सीवान के डीसीओ, नोडल पदाधिकारी लोकेश कुमार, दुर्गेश कुमार, सुमन कुमार सिंह, सीए सहित जिला के पीवीसीएस अध्यक्ष व सहायक प्रबंधक शामिल थे।

शक्षक दिवस पर जीएस कॉलेज की छात्र-छात्राओं ने किया भाषण

सिवान (उत्तरशक्ति)। बिहार के सिवान जिला अंतर्गत महाराजगंज में शिक्षक दिवस पर कार्यक्रम गोरख सिंह महाविद्यालय बीएड डीएलएड इंटरमीडिएट की छात्र छात्राओं द्वारा सर्वपल्ली डॉ राधाकृष्णन की जयंती मनाई गई। संस्था के निदेशक डॉ अभय कुमार सिंह सहायक निदेशक वीणा कुमारी, इंटरमीडिएट खंड के प्रिंसिपल मुरारी कुमार पांडे, शिक्षक डॉ अर्चना कुमारी ,डॉ राजनाथ, डॉ मंजीत कुमार,प्रो सत्य प्रकाश.प्रो मनोज कुमार,प्रो धीरेंद्र कुमार सिंह, प्रो अनिल कुमार,प्रो विजय चौधरी,प्रो पुष्पा कुमारी सिंह, प्रो राजेश कुमार प्रो सुनील गिरी आदि प्राध्यापकों ने सर्वपल्ली डॉक्टर राधाकृष्णन के चित्र पर पुष्प अर्पित किया। सभी ने डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जीवनी पर प्रकाश डाला । कार्यक्रम में शामिल छात्र-छात्राओं द्वारा भी उनकी जीवनी पर व्याख्यान किया गया। कार्यक्रम में भाग लेने वाले रवि कुमार. राजू सिंह, निशा कुमारी, रीता कुमारी , वर्षा कुमारी ,अंकिता कुमारी, रोशनी कुमारी, विशिष्ट अतिथि डॉक्टर पियूष प्रभात को अमंग वस्त्रद देकर सम्मानित किया गया।

ऑटो व कार की भिडंत,ऑटो चालक की मौत

हाथरस (उत्तरशक्ति)। हाथरस कोतवाली सदर क्षेत्र के गिजरौली के निकट 4 सितंब की रात करीब 11 बजे ऑटो व कार की भिडंत में 30 वर्षीय ऑटो चालक प्रदीप उर्फ पिंटू की मौत हो गई है। घटना की सूचना पर परिजन पोस्टमार्टम हाउस पहुंच गए। परिजनों के अनुसार सादाबाद के मोहल्ला कृष्णा नगर निवासी प्रदीप उर्फ पिंटू हाथरस से सादाबाद जा रहे थे। गांव गिजरौली के निकट कलवारी ओर से आ रही कार ने ऑटो में टक्कर मार दी। ऑटो चालक प्रदीप को गंभीर चोटें आई। क्षेत्रीय लोगों की मदद से पुलिस ऑटो चालक को उपचार के लिए बागला जिला अस्पताल लेकर पहुंची।

अखिल भारतीय समाचार पत्र एसोसिएशन का पुनर्गठन

मुंबई। अखिल भारतीय समाचार पत्र एसोसिएशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष वरिष्ठ पत्रकार अखिलेश चन्द्र शुक्ला ने महाराष्ट्र एवं उत्तर प्रदेश प्रान्त में संगठन का पुनर्गठन एवं विस्तार करते हुए अरविंद शर्मा संपादक हिंदी दैनिक भारत संवाद, प्रयागराज, लखनऊ, मुम्बई संस्करण, को महाराष्ट्र का प्रदेश अध्यक्ष मनोनीत किया। इसी क्रम में उत्तर प्रदेश का विस्तार करते हुए हिंदी दैनिक सच कहूं के सम्पादक संजय कुमार चतुर्वेदी को अध्यक्ष उत्तर प्रदेश, हिंदी दैनिक कर्मठ,के संपादक कमल श्रीवास्तव को उत्तर प्रदेश महासचिव मनोनीत किया गया। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा संगठन के प्रति निष्ठा, प्रतिबद्धता एवं सक्रियता के आधार पर पदाधिकारियों का चयन किया गया है, हमारा विश्वास है कि नियुक्त पदाधिकारियों द्वारा संगठन को एक नई दिशा एवं पहचान बनाने में सफलता प्राप्त होगी। हमारी शुभकामनाएं सदैव सबके साथ है। सभी पदाधिकारियों ने राष्ट्रीय अध्यक्ष का आभार व्यक्त करते हुए संगठन के प्रति अपने दायित्व एवं कार्य में गुणोत्तर संवर्धन हेतु संकल्पबद्धता ज्ञापित की है।

पंचकर्म विषय को लेकर हुई चर्चा

नवलगढ़(उत्तरशक्ति)। कस्बे की शिव प्यारी देवी रूथला आयुर्वेद नर्सिंग कॉलेज एवं आयुर्वेद पंचकर्म हॉस्पिटल नवलगढ़ के सभा कक्ष में एक आवश्यक बैठक आहूत की गई जिसमें आयुर्वेद विशेषज्ञों के बीच रायशुमारी हुई जिसमें आयुर्वेद की प्राचीन विद्या पंचकर्म के ज्ञान का कैसे इस धरा पर बढ़ाया जाए और शेखावाटी में पंचकर्म के परचम को कैसे फैलाए जाए इस विषय को लेकर मंथन हुआ।चर्चा के दौरान डॉ. राजेंद्र कुमावत,डॉ.राकेश माहिच, डॉ.अलका नारनौलिया,डॉ. शिखा,डॉ.योगेश चौमाल व यहां के प्रो.डॉ.रवि रूंथला ने भाग लेकर अपने विचारों से अभिभूत करवाया और क्षेत्र में नवनिर्मित हुए इस पंचकर्म हॉस्पिटल की गतिविधियों को तेज कर इस पंचकर्म थेरेपी को आगे कैसे बढ़ाया जाए इस पर भी गहरा मंथन किया और सभी ने इस बीच अपनी बात रखी और कहा कि हम इस आयुर्वेद की विद्या को अधिक विस्तार करने के लिए और आयुर्वेद का प्रचार प्रसार करते हुए जगह-जगह अस्पताल की ओर से निशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन करे, मीडिया,सोशल मीडिया व प्रिंट मीडिया में इसके बारे में बताने/ जानकारी देने और लोगों को इसकी उपयोगिता के बारे में बताए, और अधिक से अधिक आयुर्वेद के प्रति जागरूक करने सहित कई पुनीत कार्य कर आगे बढ़ने का प्रयास करेंगे,तो बहुत जल्दी ही हम आयुर्वेद का एक नया अध्याय इस शेखावाटी की धरा पर शुरू कर पाएंगे और आयुर्वेद को आरोग्य की ओर ले जाने में सक्षम भी होंगे ।जन कल्याण और विकास की पुनीत सोच के साथ आज इस अहम बैठक की शुरूआत हुई और बहुत जल्दी ही अन्य विषय विशेषज्ञो की सेवाएं भी इस अस्पताल में मिलना शुरू हो जाएगी।जो जनता की अपेक्षाओ पर

शिक्षक दिवस पर मुलुंड में वरिष्ठ शिक्षकों का भव्य सम्मान समारोह

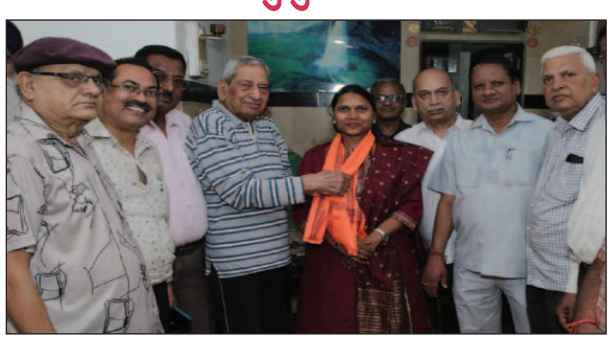

मुंबई (उत्तरशक्ति)। शिक्षक दिवस के पावन अवसर पर महानगरी को. ऑप. क्रेडिट सोसाइटी लि. एवं युवा ब्रिगेड असोसिएशन के संयुक्त तत्वावधान में मुलुंड पश्चिम के केशव पाड़ा क्षेत्र में एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन कर वरिष्ठ शिक्षकों का सम्मान किया गया। इस सम्मान समारोह में डॉ. शशिकला पटेल (प्राध्यापक, आर. आर. बी. एड. कॉलेज, मुलुंड), डॉ. आर. एम. पाल, डॉ. उषा यादव (सेवानिवृत्त प्राध्यापक), श्रीमती रेखा चौबे (राष्ट्रपति शिक्षक पदक से सम्मानित), राजकुमार यादव (महापौर पुरस्कार प्राप्त), श्रीमती जयबाला सिंह, श्रीमती रीना मोजेस, अजय पटेल, हेरम्ब तिवारी, संतोष मिश्रा, रंजीत गुप्ता, राकेश मिश्रा, हेमलता सिंह, विभा पाठक और उषा सिंह सहित कई शिक्षकों को शाल, पुष्पगुच्छ और भेंटवस्तु प्रदान कर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में वरिष्ठ समाजसेवी डॉ. बाबूलाल सिंह, उत्तर भारतीय मित्र मंडल के अध्यक्ष के. एन. सिंह, अखिल भारतीय यादव महासभा (मुंबई) के अध्यक्ष किलाचंद यादव, महानगरी मित्र मंडल के अध्यक्ष बीरेंद्र पाठक, युवा ब्रिगेड असोसिएशन के अध्यक्ष डॉ. सचिन सिंह तथा फिल्म निमार्ता योगेंद्र श्रीवास्तव उपस्थित रहे।

इस अवसर पर वक्ताओं ने कहा कि शिक्षक ही राष्ट्र के भविष्य का निर्माण करते हैं। वे विद्यार्थियों की प्रतिभा को तराशकर उन्हें समाज और देश के विकास में योगदान देने योग्य बनाते हैं। सभी उपस्थित गणमान्यजनों ने शिक्षक दिवस की शुभकामनाएँ दीं और शिक्षकों के अमूल्य योगदान को नमन किया।

विजन वेलफेयर इंस्टिट्यूट में गणेश उत्सव का भव्य आयोजन

मुंबई (उत्तरशक्ति)। मुंबई के दहिसर स्थित विजन वेलफेयर इंस्टिट्यूट में इस वर्ष गणेश उत्सव का आयोजन अत्यंत श्रद्धा, उत्साह एवं उल्लास के साथ किया गया। संस्थान परिसर में भगवान श्री गणेश की भव्य प्रतिमा की स्थापना कर पूरे दस दिनों तक धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों की रंगारंग प्रस्तुति दी गई।

उत्सव के दौरान प्रतिदिन विधिपूर्वक पूजा-अर्चना, संगीतमय आरती एवं भजन संध्या का आयोजन किया गया। इन कार्यक्रमों में संस्था के विद्यार्थियों, कर्मचारियों, पदाधिकारियों के साथ-साथ स्थानीय नागरिकों ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया।

संस्थान के वरिष्ठ पदाधिकारियों ने इस अवसर पर अपने संदेश में कहा कि, गणेशोत्सव भारतीय संस्कृति एवं परंपरा का जीवंत प्रतीक है। ऐसे आयोजन समाज में एकता, भाईचारे एवं सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति जागरूकता बढ़ाते हैं।

उत्सव का समापन गणेश विसर्जन की भव्य शोभायात्रा के साथ हुआ, जिसमें भक्तों ने मंगल गीतों, ढोल-नगाड़ों एवं जयघोषों के साथ बाप्पा को विदाई दी। विसर्जन कार्यक्रम शांतिपूर्ण एवं भक्तिमय वातावरण में संपन्न हुआ। विजन वेलफेयर इंस्टिट्यूट परिवार ने इस अवसर पर सभी के सुख, समृद्धि एवं सफलता की कामना करते हुए कहा – गणपति बाप्पा मोरया! अगले वर्ष तू जल्दी आ!

शिल्पकार की भूमिका निभाता हैं शिक्षक : डॉ आनंद

सिवान (उत्तरशक्ति)। बिहार के सिवान जिला अंतर्गत महाराजगंज शिक्षक नेता डॉ सीपू आनंद ने शहर के मौनिया बाबा स्थित अपने निवास पर कहा की भारत में हर वर्ष 5 सितंबर को बड़े हर्षोल्लास के साथ शिक्षक दिवस मनाया जाता है ' यह दिन महज औपचारिक उत्सव नहीं,बल्कि ज्ञान और संस्कार के दाता मानवता के सच्चे पथ- प्रदर्शक शिक्षकों के प्रति श्रद्धा और सम्मान का प्रतीक है ' इस दिन का चयन भारत के दूसरे राष्ट्रपति महान दार्शनिक और शिक्षाविद शिक्षक डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जयंती के अवसर पर किया गया। उन्होंने अपने जीवन में शिक्षा को केवल व्यवसाय नहीं, बल्कि सेवा का सर्वोच्च माध्यम माना जाता है। उनकी सोच थी की यदि शिक्षक को सम्मान मिलेगा, तो शिक्षा का अस्तर ऊँचा होगा और समाज में नैतिक मूल्यों की नींव मजबूत होगी । यही कारण है कल 5 सितंबर को देश भर में विद्यार्थी अपने शिक्षकों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं । यह दिवस हमें याद दिलाता है ' कि एक शिक्षक केवल किताबों का ज्ञान देने वाला नहीं होता, बल्कि जीवन का सच्चा मार्गदर्शक होता होता है ,जो अच्छे बुरे में अंतर करना सिखाता है। उन्होंने कहा सभी पीली बस्तुए सोना नहीं होती, लेकिन एकाध अपवाद के आधार पर पूरे शिक्षक समाज को कठघरे में भी नहीं खड़ा किया जा सकता है ' सच यही है कि आज भी तमाम शिक्षक दिन -रात मेहनत करते हैं, ताकि अपने विद्यार्थियों में जीवन-मूल्यों का बीजारोपण कर सकें। उन्हें एक बेहतर इंसान बना सके और समाज के लिए एक उत्पादक के तौर पर पेश कर सकें।

आज भी ऐसे शिक्षकों की कमी नहीं है, जो इस सोच के साथ जीते हैं ' शिक्षक सिर्फ.पाठ्यक्रम की सीमाओं में बाधा नहीं होता, बल्कि जीवन के हर पहलूओ को समझने का माध्यम होता है ।यही कारण है कि वे अपने आचरण से भी विद्यार्थियों के सामने उदाहरण पेश करते हैं ' साफ है, शिक्षण केवल एक पेशा नहीं ,एक महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है ।

यदि शिक्षक विद्यार्थियों को केवल अंकों की दौड़ में धकेल देगा, तो आने वाला समाज प्रतिस्पर्धा में उलझा हुआ और तनावग्रस्त रहेगा। शिक्षकों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे अपने विद्यार्थियों में मूल्यों,सहयोग और रचनात्मकता का भाव जगाता है। जिससे प्रगतिशील, संवेदनशील और नवाचार उन्मुख समाज गढ़ा जाता है और सुखमय भविष्य गढ़ा जाता है।

अनिरुद्ध रेजिडेंसी में श्रीमद् भागवत कथा के छठे दिवस रुक्मणी मंगल का हुआ रसपान

सीकर। पालवास रोड स्थित अनिरुद्ध रेजिडेंसी में चल रही श्रीमद् भागवत कथा ज्ञान यज्ञ सप्ताह के छठे दिवस पर कथा वाचक श्री बृजभूषण जी महाराज द्वारा रुक्मणी मंगल प्रसंग का मनोहारी वर्णन किया गया। कथा का आयोजन ऋषिकेश देवाचार्य श्री गणेश दास बैरागी महाराज (ककोंटक तीर्थ किरोड़ी धाम) के पावन सानिध्य में और पंडित श्री विक्रम शास्त्री (श्रीमाधोपुर) के तत्वावधान में हो रहा है। भगवान श्रीकृष्ण एवं रुक्मणी जी के विवाह प्रसंग को सुनकर श्रद्धालु भक्ति भाव में झूम उठे। भक्तों ने बैंड-बाजों की धुन पर नृत्य करते हुए प्रभु विवाह का आनंद लिया। कथा स्थल पर भक्तिरस की सरिता बहती रही और वातावरण भक्तिमय हो गया। सातवें दिवस की विशेषताः कथा के सातवें दिन सुदामा चरित्र का मार्मिक वर्णन किया जाएगा और इसके उपरांत भव्य महाआरती का आयोजन रखा गया है। मुख्य यजमानः आज के मुख्य यजमान आचार्य विक्रम शास्त्री सपत्नी श्रीमती संतोष देवी शर्मा, विजय सिंह एवं धर्मपत्नी श्रीमती अभिलाषा उर्फ मोना सिंह रहे। आयोजन में अनिरुद्ध रेजिडेंसी के अध्यक्ष श्री राजेश कुमार वर्मा सहित सैकड़ों श्रद्धालुओं ने भाग लेकर कथा का रसपान किया।

जीवन रक्षा हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेन्टर

डा0 नवीन कुमार सिंह
M.B.B.S., M.S. (Ortho)
हड्डी व जोड़ रोग विशेषज्ञ

डा0 शिल्पी सिंह
M.B.B.S., M.S. (Obs & Gyn)
स्त्री रोग विशेषज्ञ

- फ्रेक्चर
- गठिया
- कमर दर्द
- ऑथराइटिस
- कूल्हा, घुटना प्रत्यारोपण
- इत्यादि रोगो का इलाज

- सिजेरियन डिलीवरी
- बच्चेदानी का ऑपरेशन
- ट्यूमर का ऑपरेशन
- दूरबीन विधि द्वारा
- बच्चे की जाँच
- नार्मल डिलीवरी

आयुष्मान कार्ड द्वारा निःशुल्क इलाज की सुविधाएं
इमरजेन्सी सुविधा 24 घण्टे उपलब्ध

नया पता- पुलिस चौकी के सामने, सिपाह, आजमगढ़ रोड, जौनपुर (उ0.प्र0) 6390303050

त्रिभुवन सिंह मेमोरियल हॉस्पिटल

डा0 स्पृहा सिंह
M.B.B.S., MD (Pt. JNM Raipur)
CCEBDM (Diabeties)
जनरल फिजिशियन एवं मधुरोग विशेषज्ञ
पूर्व चिकित्सक आपोलो हॉस्पिटल, हैदराबाद

डा0 जयेश सिंह
एम.बी.बी.एस., एम.डी. (पीडियाट्रिक्स)
डी.एम. (नियोनेटोलॉजी)
(Fernandez Hospital, Hyderabad)
DASSI (KEM Pune)
ONTOP (AIIMS New Delhi)

पूर्वांचल के प्रथम व एकमात्र सुपर स्पेशलिस्ट नवजात शिशु व बाल रोग विशेषज्ञ

- नवजात शिशु का आई.सी.यू. एवं बच्चों के सभी रोगों का इलाज।
- निमोनिया, जन्म पर गन्दा पानी पीने वाले नवजात अत्याधुनिक आई.सी.यू. की सुविधा।
- समय से पूर्व (सतवासे) में पैदा हुए बच्चों का इलाज एवं बच्चों का समस्त टीकाकरण।
- हमारे यहाँ आयुष्मान कार्ड के द्वारा नवजात शिशु व बच्चों के डायलसिस की सुविधा
- निशुल्क उपलब्ध है। ▪ इत्यादि समस्त रोगो का इलाज की सुविधा।

हृदय रोग एवं डायबिटीज रोग विशेषज्ञ

- वयस्कों में हार्ट, किडनी, शुगर, पेट रोग, लकवा, पैरालाइसिस, निमोनिया,
- लीवर, डेंगू, मलेरिया, टाईफाइड, अस्थमा/दमा, हाईब्लड प्रेशर, मलेरिया,
- डायलसिस, सिजेरियन डिलिवरी, नसों में शून्नपन, मस्तिष्क ज्वर, पीलिया,
- हेपेटाईटिस बी., ल्यूकोरिया, खूनी पेचिस, सर दर्द, माइग्रेन, यूरिन इन्फेक्शन
- स्वास व फेफड़ा रोग व अन्य सभी रोगों का इलाज किया जाता है।

आयुष्मान कार्ड द्वारा निःशुल्क इलाज की सुविधाएं
पता- दिवानी कचहरी, अम्बेडकर तिराहा, जौनपुर (उ0.प्र0)
05452-356274/ 7992031213, 9026551423

अरुणोदय सर्जिकल एण्ड ट्रामा सेन्टर

जनरल सर्जरी
स्त्री एवं प्रसूति रोग
आर्थोपेडिक (सर्जरी एवं परामर्श)
कीमोथिरैपी सुविधा उपलब्ध
न्यूरो सर्जरी (परामर्श एवं सर्जरी)

वेन्टिलेटर एवं डायलिसिस की सुविधा उपलब्ध
प्रशिक्षित डाक्टर स्टाफ तथा सभी मानकों पर खरा उतरने वाला जनपद का एक मात्र हास्पिटल
दूरबीन विधि द्वारा सभी प्रकार की सर्जरी
जनरल मेडिसिन, मधुमेह रोग

गुर्दा एवं मूत्र रोग (सर्जरी एवं परामर्श)
गैस्ट्रोइन्टरोलॉजी (इण्डोस्कोपी एवं कालोनोस्कोपी)
एक्सीडेण्टल एवं ट्रामा इमरजेन्सी सेवा 24 घण्टे उपलब्ध

डा. अरुण आर. सिंह
कन्सल्टेन्ट लैप्रोस्कोपिक सर्जन

डा0 पुनीत सिंह
M.S.M.C.H.
गुर्दा एवं मूत्र रोग विशेषज्ञ (यूरो सर्जन)

डा0 रवि प्रकाश सिंह
M.S. (Ortho)
हड्डी एवं जोड़ रोग विशेषज्ञ

डा0 प्रभात सिंह
M.D.(Medicine)

डा0 सुमित कुमार सिंह
M.D.(Neuro Psychiatrist)

24/7 Emergency Services

बीमा कार्ड धारकों के लिए विशेष सुविधा उपलब्ध
आयुष्मान कार्ड द्वारा निःशुल्क इलाज की सुविधाएं
8090966086, 8090015086
कलीचाबाद, जौनपुर

SALVATION HOSPITAL
साल्वेशन हॉस्पिटल

The Culture of Care

डॉ. प्रियंका श्रीवास्तव
B.A.M.S.
(स्त्री रोग विशेषज्ञा)

पंडित दीनदयाल उपाध्याय
राज्यकर्मी कैशलेस चिकित्सा योजना संबद्ध अस्पताल

आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना
के अंतर्गत सूचीबद्ध अस्पताल
प्रदेश के लगभग 6 करोड़ लोगों के लिए 5 लाख रुपये तक के इलाज पूरी तरह से निःशुल्क

24/7 Emergency Services
24 घंटे भर्ती की सुविधा

आई.सी.यू. | डायलेसिस | एच.डी.यू.
नेत्र विभाग | अस्थि रोग विभाग
दन्त चिकित्सा | किडनी विभाग
जनरल मेडीसिन | जनरल सर्जरी

डॉ. विवेक श्रीवास्तव
M.D. (Physician, F.G.O.
(APOLO HOSPITAL) P.G.D.S.
Member of Indian Medical
Association UPMCI Rg. No. 95653

नोट- प्रत्येक महीने के दूसरे रविवार को प्रयागराज के गुर्दा रोग विशेषज्ञ डा0 सन्तोष मौर्य (M.D., D.M. Nephro) 12 बजे से 4 बजे तक उपलब्ध रहते हैं।

कंधरपुर, मुरादगंज, जौनपुर (वाराणसी-लखनऊ न्यू हाइवे के बगल में बाईपास से 400 मीटर की दूरी पर) 9138828282, 8686867547

एस.आर.एस.
हॉस्पिटल एण्ड ट्रामा सेन्टर

डा. अभय प्रताप सिंह
MBBS (KGMU), DNB(Ortho), MS (Ortho)
UCN, FIJR (Germany), MNAMS
आर्थ्रोस्कोपिक एण्ड ज्वाइंट रिप्लेसमेन्ट आर्थोपेडिक सर्जन
हड्डी रोग विशेषज्ञ
ओ.पी.डी. प्रतिदिन

डा. आनन्द त्रिपाठी
MBBS, MD, DM (Neuro)
न्यूरो फिजिशियन
ओ.पी.डी. प्रतिदिन

डा. निदा सलाम
CGO
स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ
ओ.पी.डी. प्रतिदिन

डा. अरविन्द कुमार अग्रहरि
MBBS, MS, MCH (Neuro)
न्यूरो सर्जन
विजिटिंग/ऑन काल

डा. एस.के. मिश्र
MBBS, MS (General Surgeon)
जनरल सर्जरी
विजिटिंग/ऑन काल

डा. चंचला मिश्रा
MBBS, MS (Obs & Gyn.)
स्त्री रोग विशेषज्ञ
विजिटिंग/ऑन काल

डा. राजेश त्रिपाठी
MBBS, MD (Anesthisia)
एनेस्थिसिया रोग विशेषज्ञ
विजिटिंग/ऑन काल

7355 358194 05452- 356555

तेज डायग्नोस्टिक सेन्टर के सामने (पेट्रोल पम्प के बगल में) नईगंज तिराहा, जौनपुर

BAJAJ
ए. एम. बजाज

मो. अशहद

अब्दुल माजिद

मानी कलां, गुरैनी रोड, जौनपुर- 222139 9621032024, 9651316060, 9621139686

AMIR TRAVELS
Hajj & Umrah Services
DOMESTIC & INTERNATIONAL AIR TICKETS

Visit Visa, Holiday Tour Packages, Waqala Delhi & Mumbai Gamca & Medical Services
Emigration, Visa Stamping, Currency Exchange, Money Transfer

TV उत्तरशक्ति NEWS

- Withdrawal & Deposit Money From All (atm & Adhar Services)
- Passport, Pan Card & Driving License Services
- Common Services Center (csc) & Sahaj Jan Seva Kendra Related Services 7860303530, 9616636079

प्रो0- मो0 आसिफ सिद्दीकी संवाददाता गुरैनी, मानीकलां
सह- संपादक डॉ. इम्तियाज अहमद सिद्दीकी (उर्फ़ बाबू भाई) उत्तरशक्ति हिंदी दैनिक, जौनपुर-लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

निकट- नसीराबाद चौक, पूर्व प्रधान नेयाज़ अहमद कटरा, मानीकलां, जौनपुर (उ0. प्र0)